RNI No. GJHIN/25/A2786
NAVSARJAN SANSKRUTI

नवसर्जन संस्कृति

नवसर्जन संस्कृति
अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 01
अंक : 215
दि. 09.05.2026,
शनिवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

कर्नल सोफिया कुरैशी टिप्पणी मामला: सुप्रीम कोर्ट की सख्ती से बढ़ा राजनीतिक और कानूनी दबाव, एमपी सरकार से पूछा-आदेश के पालन में आखिर देरी क्यों?

नई दिल्ली। भारतीय सेना की अधिकारी सोफिया कुरैशी को लेकर मध्य प्रदेश सरकार के मंत्री कुंवर विजय शाह द्वारा की गई विवादित टिप्पणी अब केवल राजनीतिक विवाद तक सीमित नहीं रह गई है, बल्कि इस मामले ने न्यायपालिका, सरकार और सार्वजनिक जवाबदेही के सवालों को भी केंद्र में ला दिया है। शुक्रवार को सुप्रीम कोर्ट में हुई सुनवाई के दौरान अदालत ने मध्य प्रदेश सरकार के रवैये पर गहरी नाराजगी जताते हुए साफ शब्दों में कहा कि अदालत के स्पष्ट निर्देशों के बावजूद अभियोजन मंजूरी पर फैसला लेने में आखिर इतनी देरी क्यों की जा रही है। अदालत की सख्त टिप्पणियों ने इस पूरे मामले को और गंभीर बना दिया है।

सुप्रीम कोर्ट की पीठ, जिसमें मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत और जस्टिस जॉयमाल्य बागची शामिल थे, ने सुनवाई के दौरान राज्य सरकार से स्पष्ट जवाब मांगा। अदालत ने दो टूक शब्दों में कहा कि अब केवल आदेश का पालन किया जाए, क्योंकि इस मामले में बहुत समय बीत चुका है। न्यायालय का संकेत साफ था कि वह राज्य सरकार की धीमी प्रक्रिया और प्रशासनिक टालमटोल से संतुष्ट नहीं है। अदालत ने इससे पहले भी मध्य प्रदेश सरकार को दो सप्ताह के भीतर अभियोजन मंजूरी पर निर्णय लेने का निर्देश दिया था, लेकिन तय समय बीत जाने के बाद भी सरकार की ओर से कोई ठोस फैसला सामने नहीं आया।

पूरा मामला उस विवादित टिप्पणी से जुड़ा है जो मध्य प्रदेश के आदिवासी मामलों के मंत्री कुंवर विजय शाह ने भारतीय सेना की अधिकारी सोफिया कुरैशी को लेकर की थी। कर्नल सोफिया कुरैशी पिछले वर्ष ऑपरेशन सिंदूर के दौरान मीडिया ब्रीफिंग में अपनी भूमिका को लेकर चर्चा में आई थीं और सेना की ओर से जानकारी साझा करने वाली प्रमुख अधिकारियों में शामिल थीं। उनकी पेशेवर भूमिका और सैन्य सेवा को लेकर देशभर में सम्मान व्यक्त किया गया था, लेकिन इसी बीच मंत्री की टिप्पणी ने विवाद खड़ा कर दिया। बयान सामने आने के बाद विपक्षी दलों, पूर्व सैन्य अधिकारियों, सामाजिक संगठनों और विभिन्न वर्गों ने इसे सेना और महिला अधिकारी दोनों के सम्मान के खिलाफ बताया था।

सुप्रीम Court में सुनवाई के दौरान केंद्र सरकार की ओर से पेश सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने अदालत को बताया कि मंत्री की टिप्पणी दुर्भाग्यपूर्ण थी। उन्होंने यह दलील भी दी कि संभवतः विजय शाह का उद्देश्य कर्नल सोफिया कुरैशी की प्रशंसा करना रहा होगा, लेकिन वे अपनी बात को उचित तरीके से प्रस्तुत नहीं कर पाए। हालांकि अदालत ने इस तर्क को स्वीकार नहीं किया। मुख्य न्यायाधीश ने स्पष्ट रूप से कहा कि यह केवल "दुर्भाग्यपूर्ण" नहीं बल्कि "बेहद दुर्भाग्यपूर्ण" टिप्पणी थी। अदालत की इस टिप्पणी से यह संकेत भी मिला कि वह मामले को केवल राजनीतिक बयानबाजी के रूप में नहीं, बल्कि सार्वजनिक पद पर बैठे व्यक्ति की जिम्मेदारी और संवेदनशीलता के संदर्भ में देख रही है।

सुनवाई के दौरान अदालत ने इस बात पर

भी गंभीर टिप्पणी की कि सार्वजनिक जीवन में रहने वाले नेताओं को अपने शब्दों के प्रभाव का पूरा ज्ञान होता है। अदालत ने कहा कि राजनेता यह अच्छी तरह जानते हैं कि कब, कहां और किस प्रकार बोलना है। यदि यह वास्तव में जुबान फिसलने जैसी स्थिति होती, तो तत्काल और स्पष्ट सार्वजनिक माफी सामने आती। अदालत ने यह भी कहा कि किसी टिप्पणी के बाद केवल कानूनी दबाव बनने पर माफी देना उसकी ईमानदारी पर सवाल खड़े करता है। मंत्री की ओर से पेश वरिष्ठ अधिवक्ता मनिंदर सिंह ने अदालत में कहा कि विजय शाह पहले ही सार्वजनिक रूप से माफी मांग चुके हैं और उनका उद्देश्य किसी का अपमान करना नहीं था। लेकिन अदालत ने इस दलील को पूरी तरह स्वीकार नहीं किया। पीठ ने कहा कि माफी केवल औपचारिकता नहीं होनी चाहिए, बल्कि उसमें वास्तविक पश्चाताप दिखाई देना चाहिए। अदालत की टिप्पणियों से यह स्पष्ट था कि वह मामले को केवल एक बयान और माफी के स्तर पर खत्म करने के पक्ष में नहीं है, बल्कि पूरे घटनाक्रम की गंभीरता को ध्यान में रखते हुए कानूनी प्रक्रिया को आगे बढ़ाना चाहती है।

इस मामले में सुप्रीम कोर्ट पहले ही एक विशेष जांच दल यानी एसआईटी के गठन का आदेश दे चुका है। तीन सदस्यीय इस एसआईटी में एक महिला आईपीएस अधिकारी को भी शामिल किया गया है। अदालत ने यह कदम इसलिए उठाया था ताकि मामले की निष्पक्ष और स्वतंत्र जांच सुनिश्चित की जा सके। अब अदालत ने राज्य सरकार को निर्देश दिया है कि वह अभियोजन मंजूरी पर जल्द निर्णय लेकर अपने पूर्व आदेश का पालन करे। साथ ही अदालत ने यह भी कहा कि पूरे मामले की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए जिम्मेदारी तय की जानी चाहिए।

राजनीतिक स्तर पर भी यह मामला लगातार चर्चा का विषय बना हुआ है। विपक्ष इस मुद्दे को महिला सम्मान, सेना की गरिमा और संवैधानिक जिम्मेदारी से जोड़कर सरकार पर हमलावर है। वहीं सत्तापक्ष की ओर से नुकसान नियंत्रण की कोशिशें जारी हैं। लेकिन सुप्रीम कोर्ट की सख्त टिप्पणियों ने सरकार की मुश्किलें बढ़ा दी हैं। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि यह मामला केवल एक बयान का विवाद नहीं रह गया है, बल्कि अब यह इस सवाल से जुड़ गया है कि सार्वजनिक पदों पर बैठे लोग अपनी भाषा और आचरण के प्रति कितने जवाबदेह हैं।

देश में सेना को हमेशा अत्यंत सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है और सेना से जुड़े अधिकारियों के प्रति किसी भी तरह की टिप्पणी को लोग गंभीरता से लेते हैं। विशेष रूप से जब मामला महिला सैन्य अधिकारी से जुड़ा हो, तब संवेदनशीलता और भी बढ़ जाती है। यही कारण है कि इस पूरे घटनाक्रम ने व्यापक सामाजिक प्रतिक्रिया पैदा की। कई पूर्व सैन्य अधिकारियों ने भी कहा कि राजनीतिक व्यक्तियों को सेना और उसके अधिकारियों को लेकर बयान देते समय अत्यधिक सावधानी बरतनी चाहिए।

कानूनी विशेषज्ञों के अनुसार, सुप्रीम कोर्ट की टिप्पणियां इस बात का संकेत हैं कि अदालत सार्वजनिक जीवन में जवाबदेही को लेकर सख्त रुख अपना रही है। अदालत यह स्पष्ट संदेश देना चाहती है कि संवैधानिक पदों पर बैठे लोगों के बयान केवल व्यक्तिगत राय नहीं माने जा सकते, क्योंकि उनके शब्दों का व्यापक सामाजिक और संस्थागत प्रभाव पड़ता है। यही कारण है कि अदालत ने अभियोजन मंजूरी में देरी को गंभीरता से लिया और राज्य सरकार से जवाब तलब किया। अब इस मामले की अगली सुनवाई चार सप्ताह बाद होगी। तब तक राज्य सरकार को अदालत के निर्देशों के अनुरूप अभियोजन मंजूरी पर निर्णय लेना होगा। आने वाले दिनों में यह देखना महत्वपूर्ण होगा कि सरकार इस मामले में क्या रुख अपनाती है और एसआईटी जांच में क्या तथ्य सामने आते हैं। फिलहाल सुप्रीम कोर्ट की सख्त टिप्पणियों ने यह स्पष्ट कर दिया है कि न्यायपालिका इस मामले को हल्के में लेने के मूड में नहीं है और वह जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए पूरी गंभीरता के साथ आगे बढ़ रही है।

कांग्रेस से दूरी और टीवीके को समर्थन के बाद बदले समीकरण: लोकसभा में डीएमके ने सीटिंग व्यवस्था बदलने की मांग, कनिमोझी का पत्र चर्चा में

नई दिल्ली। तमिलनाडु की राजनीति में चुनावी परिणामों के बाद शुरू हुई हलचल अब संसद तक पहुंच गई है। सत्ता समीकरणों में आए बदलावों और नए राजनीतिक गठबंधनों के बीच द्रविड़ मुन्नेत्र कड़गम (द्रविड़ मुन्नेत्र कड़गम) ने लोकसभा में अपने सांसदों की बैठने की व्यवस्था बदलने की औपचारिक मांग कर दी है। पार्टी की वरिष्ठ नेता और सांसद कनिमोझी करुणानिधि ने लोकसभा अध्यक्ष को पत्र लिखकर अनुरोध किया है कि मौजूदा राजनीतिक परिस्थितियों को देखते हुए डीएमके के सांसदों को कांग्रेस सांसदों से अलग सीटिंग अरेंजमेंट दिया जाए।

कनिमोझी के इस पत्र ने संसद और राजनीतिक गलियारों में नई चर्चा छेड़ दी है, क्योंकि यह कदम केवल प्रशासनिक बदलाव का अनुरोध नहीं माना जा रहा, बल्कि इसे बदलते राजनीतिक गठबंधनों का औपचारिक संकेत भी माना जा रहा है। अपने पत्र में उन्होंने स्पष्ट किया कि हालिया राजनीतिक घटनाक्रमों और गठबंधन समीकरणों में आए बदलावों के बाद डीएमके सांसदों का भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सांसदों के साथ एक ही ब्लॉक में बैठना अब उचित नहीं रह गया है।

सूत्रों के अनुसार, यह पूरा घटनाक्रम तमिलनाडु विधानसभा चुनावों के बाद बदले राजनीतिक माहौल से जुड़ा है, जहां अभिनेता से नेता बने विजय की पार्टी टीवीके ने अप्रत्याशित प्रदर्शन करते हुए सबसे बड़ी ताकत के रूप में उभरकर राजनीतिक समीकरण बदल दिए।

टीवीके के सत्ता समीकरण में आने के बाद कांग्रेस ने डीएमके से दूरी बनाते हुए टीवीके को समर्थन देने का फैसला किया, जिससे दोनों पुराने सहयोगियों के बीच तनाव बढ़ गया।

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि यही वह निर्णायक मोड़ था, जिसके बाद डीएमके और कांग्रेस के रिश्तों में दरार सार्वजनिक रूप से दिखाई देने लगी। लंबे समय से दोनों दल तमिलनाडु और राष्ट्रीय राजनीति में एक साथ सहयोगी रहे थे, लेकिन हालिया घटनाक्रमों ने उनके बीच भरोसे की दूरी बढ़ा दी है। लोकसभा में सीटिंग व्यवस्था को बदलने का अनुरोध इसी बदलते राजनीतिक परिदृश्य का प्रतीक माना जा रहा है।

कनिमोझी ने अपने पत्र में यह भी लिखा है कि संसद में बैठने की व्यवस्था केवल औपचारिकता नहीं होती, बल्कि यह राजनीतिक सहयोग और समन्वय का भी प्रतीक होती है। ऐसे में जब राजनीतिक परिस्थितियां बदल चुकी हैं, तो व्यवस्था में भी बदलाव आवश्यक है ताकि पार्टी के सांसद अपनी भूमिका अधिक प्रभावी ढंग से निभा सकें। उन्होंने यह उम्मीद जताई कि लोकसभा अध्यक्ष उनके अनुरोध पर गंभीरता से विचार करेंगे और उचित निर्णय लेंगे।

लोकसभा में सीटिंग अरेंजमेंट का निर्णय पूरी तरह लोकसभा अध्यक्ष के अधिकार क्षेत्र में आता है। संसदीय परंपराओं के अनुसार, विभिन्न दलों के सांसदों की बैठने की व्यवस्था उनके गठबंधन, दलगत स्थिति और राजनीतिक समीकरणों के आधार पर तय की जाती है। इसलिए यह माना जा रहा है कि यदि यह बदलाव होता है, तो यह केवल तकनीकी नहीं बल्कि राजनीतिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण संदेश देगा।

राजनीतिक हलकों में यह चर्चा भी तेज हो गई है कि क्या यह कदम केवल संसदीय व्यवस्था का हिस्सा है या फिर यह कांग्रेस और डीएमके के बीच गठबंधन के औपचारिक अंत का संकेत है। पहले से ही तमिलनाडु की राजनीति में गठबंधनों में उथल-पुथल देखी जा रही है, और टीवीके के उभार ने पारंपरिक समीकरणों को काफी हद तक बदल दिया है।

हालिया विधानसभा चुनावों में टीवीके के प्रदर्शन ने राज्य की राजनीति में नई ताकत का उदय दिखाया। कांग्रेस द्वारा टीवीके को समर्थन देने के बाद डीएमके और कांग्रेस के संबंधों में दूरी और स्पष्ट हो गई। इसी पृष्ठभूमि में संसद के भीतर भी राजनीतिक दूरी दिखाने की प्रक्रिया शुरू हो गई है। विश्लेषकों का मानना है कि संसद में अलग बैठने की मांग केवल प्रतीकात्मक नहीं है, बल्कि यह भविष्य की राजनीतिक रणनीति का हिस्सा भी हो सकती है। सूत्रों के अनुसार, लोकसभा सचिवालय ने इस पत्र को प्राप्त कर लिया है और उस पर विचार प्रक्रिया शुरू हो चुकी है। हालांकि अंतिम निर्णय लोकसभा अध्यक्ष को ही लेना है। यदि सीटिंग व्यवस्था में बदलाव होता है, तो यह संसद के भीतर राजनीतिक दलों के नए समीकरणों को औपचारिक रूप देगा।

इस पूरे घटनाक्रम ने यह भी स्पष्ट कर दिया है कि तमिलनाडु की राजनीति अब केवल राज्य तक सीमित नहीं रही, बल्कि उसके प्रभाव राष्ट्रीय राजनीति और संसद तक पहुंच चुके हैं। डीएमके, कांग्रेस और टीवीके के बीच बदलते समीकरण आने वाले समय में और भी राजनीतिक बदलावों का संकेत दे सकते हैं। फिलहाल राजनीतिक गलियारों में यह चर्चा जोर पकड़ रही है कि क्या यह दूरी स्थायी होगी या फिर परिस्थितियों के अनुसार आगे चलकर नए गठबंधन बन सकते हैं। लेकिन इतना तय है कि कनिमोझी का यह पत्र केवल एक प्रशासनिक अनुरोध नहीं, बल्कि बदलते राजनीतिक परिदृश्य का स्पष्ट संदेश है, जिसने संसद से लेकर तमिलनाडु तक राजनीतिक हलचल तेज कर दी है।

केरल कांग्रेस में नेतृत्व की जंग तेज: खरगे को सौंपी गई रिपोर्ट से बढ़ी हलचल, मुख्यमंत्री चेहरे को लेकर कई गुट सक्रिय

कोच्चि। केरल में कांग्रेस संगठन के भीतर नेतृत्व परिवर्तन और संभावित मुख्यमंत्री चेहरे को लेकर चल रही खींचतान अब निर्णायक मोड़ पर पहुंचती दिखाई दे रही है। पार्टी हाईकमान द्वारा नियुक्त पर्यवेक्षकों ने राज्य के सभी कांग्रेस विधायकों से विस्तृत बातचीत के बाद अपनी रिपोर्ट कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे को सौंप दी है। यह रिपोर्ट शुक्रवार दोपहर लगभग 12 बजे प्रस्तुत की गई, जिसमें विधायकों की व्यक्तिगत और सामूहिक राय दोनों को शामिल किया गया है। इस रिपोर्ट के बाद अब पार्टी नेतृत्व पर अंतिम निर्णय लेने का दबाव और बढ़ गया है।

सूत्रों के अनुसार, केरल कांग्रेस के भीतर सबसे मजबूत दावेदारी के.सी. वेणुगोपाल की सामने आई है। बताया जा रहा है कि लगभग 40 से 43 विधायक उनके समर्थन में हैं, जिससे वे मुख्यमंत्री पद के सबसे प्रबल दावेदार बनकर उभरे हैं। वेणुगोपाल लंबे समय से पार्टी संगठन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहे हैं और राष्ट्रीय स्तर पर भी कांग्रेस नेतृत्व के करीबी माने जाते हैं। यही कारण है कि उनका नाम इस दौड़ में सबसे आगे माना जा रहा है, हालांकि अंतिम फैसला अभी भी पार्टी हाईकमान के हाथ में है।

पार्टी के भीतर चर्चा इस बात पर भी केंद्रित है कि क्या राहुल गांधी इस फैसले में निर्णायक भूमिका निभाएंगे। राजनीतिक हलकों में यह माना जा रहा है कि राहुल गांधी की राय के बिना केरल जैसे महत्वपूर्ण राज्य में नेतृत्व परिवर्तन पर अंतिम मुहर लगना मुश्किल है। वेणुगोपाल को राहुल गांधी का करीबी सहयोगी माना जाता है, इसलिए उनके नाम पर सहमति बनने की संभावना को लेकर पार्टी के भीतर अलग-अलग राय सामने आ रही है।

हालांकि, इस रेस में केवल एक नाम नहीं है। यदि के.सी. वेणुगोपाल के नाम पर सहमति नहीं बनती है, तो रमेश चेन्निथला को एक मजबूत विकल्प के रूप में देखा जा रहा है। सूत्रों के अनुसार, करीब 20 से अधिक विधायक उनके समर्थन में हैं। चेन्निथला पहले भी राज्य की राजनीति में महत्वपूर्ण पदों पर रह चुके हैं और उन्हें एक अनुभवी और संतुलित नेता माना जाता है। पार्टी के एक वर्ग का मानना है कि उनके नेतृत्व में संगठन और सरकार के बीच बेहतर तालमेल स्थापित किया जा सकता है।

इसी बीच, वी.डी. सतीशन का नाम भी चर्चा में बना हुआ है। उन्हें न केवल कांग्रेस के भीतर बल्कि संयुक्त लोकतांत्रिक मोर्चा (यूडीएफ) के सहयोगी दलों का भी समर्थन मिलता दिख रहा है। इनमें इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग, केरल कांग्रेस (जोसेफ गुट) और रिवोल्यूशनरी सोशलिस्ट पार्टी शामिल हैं। सहयोगी दलों का कहना है कि सतीशन ने विपक्ष के नेता के रूप में जमीनी स्तर पर प्रभावी भूमिका निभाई है और वे संगठन को मजबूती देने में सक्षम हैं।

पार्टी सूत्रों के अनुसार, पर्यवेक्षकों ने विधायकों से न केवल व्यक्तिगत राय ली, बल्कि यह भी समझने की कोशिश की कि राज्य में पार्टी का भविष्य नेतृत्व किस दिशा में बेहतर रह सकता है। रिपोर्ट में यह भी संकेत दिया गया है कि केरल कांग्रेस में एकरूपता की कमी और गुटबाजी लंबे समय से एक चुनौती बनी हुई है, जिसे नए नेतृत्व के जरिए संतुलित करने की जरूरत है।

केरल कांग्रेस में नेतृत्व को लेकर यह मंथन ऐसे समय में हो रहा है जब राज्य की राजनीति में विपक्षी रणनीति को मजबूत करने की आवश्यकता महसूस की जा रही है। पार्टी का उद्देश्य आगामी चुनावों में बेहतर प्रदर्शन करना और संगठनात्मक ढांचे को अधिक प्रभावी बनाना है। इसी वजह से मुख्यमंत्री चेहरे का चयन केवल राजनीतिक नहीं बल्कि रणनीतिक दृष्टि से भी बेहद महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि यह निर्णय केवल किसी एक व्यक्ति के चयन तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि इससे केरल में कांग्रेस की भविष्य की दिशा भी तय होगी। यदि नेतृत्व में स्थिरता और एकता बनी रहती है, तो पार्टी अपने जनाधार को मजबूत कर सकती है, लेकिन यदि गुटबाजी बनी रही तो इसका असर चुनावी प्रदर्शन पर पड़ सकता है।

दिल्ली से हरियाणा तक फैला आतंकी साजिश का जाल: आईएसआई समर्थित मॉड्यूल के निशाने पर मंदिर, सैन्य शिविर और भीड़भाड़ वाले ठिकाने

नई दिल्ली। राजधानी दिल्ली सहित उत्तर भारत के कई संवेदनशील इलाकों में बड़े आतंकी हमलों की साजिश रचे जाने का सनसनीखेज खुलासा हुआ है। जांच एजेंसियों के मुताबिक पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी इंटर-सर्विस इंटेलिजेंस से जुड़े एक मॉड्यूल ने दिल्ली, हरियाणा और उत्तर प्रदेश में कई प्रमुख ठिकानों को निशाना बनाने की योजना तैयार की थी। इस साजिश का पर्दाफाश तब हुआ, जब दिल्ली पुलिस स्पेशल सेल ने 'गैंग बस्ट ऑपरेशन 2.0' के तहत शाहजाद भट्टी मॉड्यूल से जुड़े नौ संदिग्ध सदस्यों को विभिन्न राज्यों से गिरफ्तार किया। पूछताछ में सामने आए खुलासों ने सुरक्षा एजेंसियों की चिंता बढ़ा दी है, क्योंकि आरोपियों के निशाने पर धार्मिक स्थल, सैन्य प्रतिष्ठान, पुलिस थाने और भीड़भाड़ वाले सार्वजनिक स्थान शामिल थे।

जांच एजेंसियों के अनुसार गिरफ्तार आरोपियों से पूछताछ के दौरान पता चला कि मॉड्यूल ने राजधानी दिल्ली के एक ऐतिहासिक मंदिर पर हमले की विस्तृत योजना तैयार की थी। आरोपियों में से एक ने मंदिर परिसर की रेकी की थी और वहां की तस्वीरें तथा अन्य जानकारियां सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के जरिए पाकिस्तान स्थित संचालकों तक पहुंचाई थीं। जांचकर्ताओं का कहना है कि यह केवल सामान्य निगरानी नहीं थी, बल्कि हमले से पहले की रणनीतिक तैयारी का हिस्सा थी। एजेंसियों को संदेह है कि मॉड्यूल धार्मिक स्थल को निशाना बनाकर व्यापक दहशत फैलाना चाहता था।

सूत्रों के मुताबिक मॉड्यूल की योजना केवल मंदिर परिसर तक सीमित नहीं थी। पूछताछ में यह भी सामने आया कि हमलावर मंदिर की सुरक्षा में तैनात पुलिस

और अर्धसैनिक बलों के जवानों को भी निशाना बनाना चाहते थे। प्रारंभिक जांच में यह संकेत मिले हैं कि योजना गोलीबारी कर अफरातफरी और भय का माहौल पैदा करने की थी। सुरक्षा एजेंसियां इस बात की जांच कर रही हैं कि आरोपियों के पास हथियारों की व्यवस्था कहां से होनी थी और उन्हें किस स्तर का प्रशिक्षण मिला था।

दिल्ली के अलावा हरियाणा भी इस कथित साजिश का प्रमुख केंद्र था। जांच में सामने आया है कि मॉड्यूल के सदस्यों ने हिसार स्थित एक सैन्य शिविर की भी रेकी की थी। आरोपियों ने इलाके के वीडियो और अन्य सूचनाएं सीमापार बैठे अपने संचालकों को भेजी थीं। अधिकारियों का कहना है कि सैन्य प्रतिष्ठानों की निगरानी और वीडियो रिकॉर्डिंग अत्यंत गंभीर मामला है, क्योंकि इससे देश की सुरक्षा व्यवस्था और संवेदनशील सैन्य गतिविधियों की जानकारी दुश्मन एजेंसियों तक पहुंच सकती है। इस खुलासे के बाद सैन्य और सुरक्षा प्रतिष्ठानों की निगरानी और सतर्कता बढ़ा दी गई है। जांच एजेंसियों को यह भी पता चला है कि मॉड्यूल को हरियाणा के प्रसिद्ध मुरथल क्षेत्र में स्थित एक लोकप्रिय ढाबे को निशाना बनाने का काम सौंपा गया था। दिल्ली-सोनीपत राजमार्ग पर स्थित यह इलाका दिन-रात यात्रियों और पर्यटकों से भरा रहता है। यहां रोजाना हजारों लोग भोजन और विश्राम के लिए रुकते हैं। सूत्रों के अनुसार आरोपियों को यहां ग्रेनेड हमला करने की जिम्मेदारी दी गई थी, ताकि अधिकतम जनहानि और दहशत फैलाई जा सके। जांचकर्ताओं का मानना है कि यदि यह साजिश सफल हो जाती, तो भारी संख्या में लोग इसकी चपेट में आ सकते थे।

उत्तर प्रदेश भी इस मॉड्यूल की कथित योजना का हिस्सा था। पूछताछ में आरोपियों ने कुछ पुलिस थानों की निगरानी किए जाने की जानकारी दी है। हालांकि सुरक्षा कारणों से एजेंसियों ने अभी उन स्थानों के नाम सार्वजनिक नहीं किए हैं। अधिकारियों का कहना है कि पुलिस प्रतिष्ठानों को निशाना बनाने का उद्देश्य सुरक्षा व्यवस्था को चुनौती देना और प्रशासनिक तंत्र में भय पैदा करना हो सकता था।

यह पूरा खुलासा ऐसे समय सामने आया है जब जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले को एक वर्ष पूरा हुआ है। सुरक्षा एजेंसियां इस बात की भी जांच कर रही हैं कि क्या गिरफ्तार मॉड्यूल का किसी पुराने आतंकी नेटवर्क या सीमापार संचालित संगठनों से प्रत्यक्ष संबंध था। जांच में डिजिटल कम्युनिकेशन, सोशल मीडिया गतिविधियों और वित्तीय लेन-देन को भी खंगाला जा रहा है।

अधिकारियों के मुताबिक आरोपियों को अलग-अलग जिम्मेदारियां दी गई थीं। किसी को रेकी का काम सौंपा गया था, तो किसी को वीडियो और तस्वीरें भेजने की जिम्मेदारी दी गई थी। कुछ संदिग्धों को संभावित हमले के स्थानों पर स्थानीय गतिविधियों और सुरक्षा व्यवस्था की जानकारी जुटाने के निर्देश मिले थे। इससे संकेत मिलता है कि मॉड्यूल संगठित तरीके से काम कर रहा था और उसकी गतिविधियां लंबे समय से चल रही थीं।

सुरक्षा एजेंसियां अब यह पता लगाने में जुटी हैं कि मॉड्यूल को फंडिंग कहां से मिल रही थी और उसके नेटवर्क में और कौन-कौन लोग शामिल थे। जांच में डिजिटल डिवाइस, मोबाइल फोन और सोशल मीडिया अकाउंट्स की फॉरेंसिक जांच की जा रही है। अधिकारियों को उम्मीद है कि इससे सीमापार संचालित नेटवर्क और स्थानीय संपर्कों के बारे में अहम जानकारी मिल सकती है।

विशेषज्ञों का मानना है कि पिछले कुछ वर्षों में आतंकी मॉड्यूल का तरीका बदलता दिखाई दिया है। अब केवल बड़े शहरों या सरकारी इमारतों को ही नहीं, बल्कि भीड़भाड़ वाले सार्वजनिक स्थानों, धार्मिक स्थलों और सुरक्षा प्रतिष्ठानों को भी निशाना बनाया जा रहा है।

संपादकीय

गाल में कानूनी व्यवस्था की हो बहाली

छिटपुट हिंसा की घटनाओं के बावजूद पश्चिम बंगाल में कमोबेश शांतिपूर्ण मतदान हुआ था। लेकिन चुनाव परिणाम घोषित होने के बाद हो रही हिंसा की घटनाएं परेशान करने वाली हैं। भाजपा व टीएमसी के कुछ समर्थकों में हिंसक झड़पों के अलावा राज्य में पार्टी के अगुवा रहे सुवेंदु अधिकारी के करीबी चंद्रनाथ रथ की हत्या चौंकाने वाली है। इससे दोनों दलों के बीच तनाव बढ़ा है। राज्य में मुख्यमंत्री पद के प्रबल दावेदार सुवेंदु अधिकारी का दावा है कि रथ की हत्या उनके करीबी होने के कारण की गई है। वहीं चंद्रनाथ के परिजनों का आरोप है कि यह हत्या ममता बनर्जी की भवानीपुर में अधिकारी से हुई हार का बदला लेने के लिये की गई है। उल्लेखनीय है कि इस दौरान कुछ भाजपा व टीएमसी कार्यकर्ताओं की भी हत्या की गई है। दरअसल, पंद्रह साल से सत्ता में काबिज रही टीएमसी पर भाजपा की बड़ी जीत ने दोनों पार्टियों के बीच तनाव को बढ़ाया है। यही वजह है कि भारतीय चुनाव आयोग पर हमलावर होते हुए ममता बनर्जी ने केवल चुनाव परिणामों को ही खारिज नहीं किया, बल्कि मुख्यमंत्री के पद से इस्तीफा देने तक से मना कर दिया। उनकी इस घोषणा ने लंबे समय से जारी टकराव को बढ़ाने का काम ही किया। इस घटनाक्रम से टीएमसी कार्यकर्ताओं को आक्रामक होने का मौका मिला। निश्चय ही यह स्थिति राज्य के हित में नहीं कही जा सकती। राज्य में कानून व्यवस्था को प्राथमिकता के आधार पर बहाल किए जाने की जरूरत है। कायदे में चुनाव परिणाम सामने आने के बाद ममता को सदाशयता का परिचय देते हुए कार्यकर्ताओं से शांत रहने की अपील राज्य हित में करनी चाहिए। यही लोकतंत्र का तकाजा भी है। वहीं दूसरी ओर, भाजपा को भी अपने कार्यकर्ताओं को शांत रहने के लिये प्रेरित करना चाहिए। उन्हें चुनाव परिणाम सामने आने के बाद हिंसा से परहेज करना चाहिए। यही लोकतंत्र की प्रतिष्ठा भी है।

यह विडंबना ही है कि चुनाव आयोग द्वारा राज्य के अधिकारियों को विजय जुलूसों पर प्रतिबंध लगाने के निर्देश देने के बाद भी दोनों दलों के कार्यकर्ताओं के बीच हिंसक झड़पें हुई हैं। ऐसी स्थिति में राज्य पुलिस को हिंसा के प्रति जीरो टॉलरेंस दिखाते हुए, केंद्रीय बलों के साथ कानून व्यवस्था बहाल करने के लिये मिलकर काम करना चाहिए। यूं तो पूरे राज्य में ही, अन्यथा खासकर संवेदनशील इलाकों में निगरानी बढ़ायी जानी चाहिए। हिंसक वारदातों व तोड़फोड़ में शामिल लोगों की पहचान करके उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई की जानी चाहिए। किसी भी राजनीतिक दल से संबद्धता की परवाह किए बिना उपद्रवियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करना वक्त की जरूरत है। भाजपा व टीएमसी को अपने कार्यकर्ताओं से संयम बरतने को कहना चाहिए। वास्तव में अतीत में हिंसा का लंबा इतिहास रखने वाले पश्चिम बंगाल को अब नये सिरे से शुरुआत करके विकास के पथ पर लौटना चाहिए। यह निर्विवाद सत्य है कि किसी भी हिंसा की कीमत आखिर आम जनता को ही चुकानी पड़ती है। यदि पश्चिम बंगाल के राजनीतिक इतिहास पर नजर डालें तो पाते हैं कि राज्य की राजनीति में अपराध जगत से जुड़े व दबंग किस्म के लोग दखल देते रहे हैं। कभी वे राजनीतिक दलों के लिए बूथ लूटने का काम किया करते थे। एक समय वामपंथी सरकार में दखल रखने वाले ये लोग कालांतर तृणमूल कांग्रेस के लिये काम करने लगे थे। दरअसल, ये लोग अपनी सुविधा के हिसाब से राजनीतिक शरण लेकर अपने मंसूबों को पूरा करते रहे हैं। जाहिर है,अब राज्य में तृणमूल कांग्रेस सत्ता से बाहर हो गई है तो वे भाजपा की छतरी के नीचे आने की कोशिश कर रहे होंगे। कहीं न कहीं हालिया हिंसा में उनकी भी भूमिका हो सकती है। यही वजह है कि भाजपा की तरफ से कहा जा रहा है कि अब तक टीएमसी से जुड़े रहे कुछ लोग खुद को भाजपा का बता रहे हैं। शुभेंदु अधिकारी को यहां तक कहना पड़ा कि जब तक भाजपा किसी व्यक्ति को पार्टी का सदस्य न बनाये तब तक वह व्यक्ति खुद को भाजपा का नहीं बता सकता है। बहरहाल, राज्य में शांति की स्थापना शासन-प्रशासन की प्राथमिकता होनी चाहिए।

विध्वंस से सृजन तक की यात्रा का जीवंत होना

> “सोमनाथ हमें याद दिलाता है कि जब कोई समाज अपनी आस्था, अपनी संस्कृति और अपनी एकता से जुड़ा रहता है, तब उसे लंबे समय तक दबाया नहीं जा सकता। आज भी हमारी सबसे बड़ी शक्ति यही साझा चेतना है, यही एकात्म भाव है।

जय सोमनाथ! वर्ष 2026 की शुरुआत में मुझे सोमनाथ स्वाभिमान पर्व में सम्मिलित होने का सौभाग्य मिला। यह सोमनाथ मंदिर पर हुए पहले आक्रमण के एक हजार वर्ष बाद भी मंदिर के शाश्वत व अविनाशी होने का पर्व था। अब 11 मई को मुझे एक बार फिर सोमनाथ जाने का सुअवसर प्राप्त हो रहा है। यह यात्रा पुनर्निर्मित सोमनाथ मंदिर के लोकार्पण की 75वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में है। मैं उस क्षण को फिर जीने जा रहा हूं जब भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद जी ने मंदिर का लोकार्पण किया था। उस दिन, सोमनाथ में विध्वंस से सृजन तक की यात्रा फिर से जीवंत होगी। छह महीनों के भीतर सोमनाथ के इतिहास से जुड़े इन दो अत्यंत महत्वपूर्ण पड़ावों का साक्षी बनना मेरे लिए सौभाग्य की बात है।

सोमनाथ केवल एक मंदिर नहीं, हमारी सभ्यता का अटूट संकल्प है। इसके सामने लहराता विशाल समुद्र अनंत काल की अनुभूति कराता है। इसकी लहरें सिखाती हैं कि तूफान चाहे कितने भी विकराल क्यों न हों, मनुष्य का साहस-आत्मबल हर बार फिर से उठ खड़ा होने में सक्षम है। तट से टकराती लहरें सदियों से उद्घोष कर रही हैं कि मानवीय चेतना लंबे समय तक दबायी नहीं जा सकती।

हमारे प्राचीन शास्त्रों में लिखा है—प्रभासं च परिक्रम्य पृथिवीक्रमसंभवम् अर्थात दिव्य प्रभास (सोमनाथ) की परिक्रमा पूरी पृथ्वी की परिक्रमा के समान है! जब लोग यहां दर्शन-पूजन हेतु आते हैं, तब उन्हें उस सभ्यता की अद्भुत निरंतरता का भी अनुभव होता है, जिसकी ज्योति कभी बुझाई नहीं जा सकी। कई साम्राज्य आए और गए, समय बदला और इतिहास ने ढेरों उतार-चढ़ाव देखे, फिर भी सोमनाथ हमारे हृदय में हमेशा बना रहा।

यह समय उन असंख्य महान विभूतियों के स्मरण का भी है, जो क्रूर आक्रांताओं के सम्मुख अडिग रहे। लकुलीश और सोम शर्मा जैसे

मनीषियों ने प्रभास को शैव दर्शन का महान केंद्र बनाया। चक्रवर्ती महाराज धारसेन चतुर्थ ने सदियों पहले वहां दूसरा मंदिर बनवाया। समय की कठिन परीक्षा के बीच भीम प्रथम, जयपाल और आनंदपाल जैसे शासकों ने आक्रमणों के विरुद्ध अपनी सभ्यता को ढाल बनकर मंदिर की रक्षा की थी। मान्यता है कि महान राजा भोज ने भी इस पावन स्थल के पुनर्निर्माण में अमूल्य योगदान दिया था। कर्णदेव सोलंकी और जयसिंह सिद्धराज ने गुजरात की राजनीतिक-सांस्कृतिक शक्ति को पुनर्स्थापित करने में अहम भूमिका निभाई। भाव बृहस्पति, कुमारपाल सोलंकी और पाशुपताचार्यों ने इस तीर्थ को आराधना-ज्ञान के केंद्र के रूप में स्थापित करने में योगदान दिया। विशालदेव वाघेला और त्रिपुरांतक ने इसकी बौद्धिक और आध्यात्मिक परंपराओं की रक्षा की। महिपाल चूड़ासमा और राव खंगार चूड़ासमा ने विध्वंस के बाद पूजा-पाठ की परंपरा को पुनर्जीवित किया। पुण्यश्लोक अहिल्याबाई होल्कर, जिनकी 300वीं जयंती मनाई जा रही है, उन्होंने सबसे चुनौतीपूर्ण समय में भी भक्ति की परंपरा को जीवंत रखा। बड़ौदा के गायकवाड़ों ने तीर्थयात्रियों के अधिकारों की रक्षा की। साथ ही हमारी यह धरती वीर हमीरजी गोहिल, वीर वेगड़ाजी भील जैसे पराक्रमियों से धन्य हुई है। उनका साहस-बलिदान स्मरणीय है। 1940 के दशक में स्वतंत्रता की भावना पूरे भारत में फैली। सरदार पटेल जैसे महान नेताओं के नेतृत्व में स्वतंत्र भारत की नींव रखी जा रही थी। एक बात जो उन्हें बहुत व्यथित करती थी, वह थी- सोमनाथ की दुर्दशा। 13 नवंबर, 1947 को, दिवाली के समय, उन्होंने सोमनाथ के जर्जर अवशेषों के सामने खड़े होकर, समुद्र का जल हाथ में लेकर संकल्प लिया, 'इस (गुजराती) नववर्ष पर हमारा निश्चय है कि सोमनाथ का पुनर्निर्माण होगा। सौराष्ट्र के लोगों को हर तरह से अपना योगदान देना होगा। यह एक पावन कार्य है, जिसमें हर किसी को भागीदारी निभानी होगी।' उनके आह्वान ने सिर्फ गुजरात ही नहीं, बल्कि संपूर्ण भारतवर्ष को नए उत्साह से भरा।

दुर्भाग्यवश, सरदार पटेल अपने उस सपने को साकार होते नहीं देख सके, जिसके लिए उन्होंने स्वयं को समर्पित किया था। इससे पहले कि जीर्णोद्धार उपरांत सोमनाथ मंदिर भक्तों के लिए खुलता, उन्होंने इस दुनिया को अलविदा कह दिया। इसके बावजूद, प्रभास पाटन की पावन धरती पर उनका प्रभाव निरंतर महसूस होता रहा है। उनके विजन को के.एम. मुंशी ने आगे बढ़ाया, जिन्हें नवानगर के जामसाहेब का समर्थन मिला। 1951 में मंदिर का पुनर्निर्माण पूरा होने पर राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद को उद्घाटन के लिए आमंत्रित किया गया। तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित नेहरू के विरोध के बावजूद, डॉ. प्रसाद ने समारोह में हिस्सा लेकर इसे ऐतिहासिक बना दिया। मुझे अक्तूबर, 2001 का समय आज भी अच्छे से याद है, जब मैंने मुख्यमंत्री के रूप में दायित्व संभाला था। 31 अक्तूबर, 2001 को, सरदार पटेल की जयंती पर गुजरात सरकार ने सोमनाथ मंदिर के पुनर्निर्माण की 50वीं वर्षगांठ का भव्य आयोजन किया। इसी समय सरदार पटेल की 125वीं जयंती भी मनाई जा रही थी। इस कार्यक्रम में तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जी और तत्कालीन गृहमंत्री लालकृष्ण आडवाणी जी की मौजूदगी ने इसे और भी गरिमापूर्ण बना दिया।

11 मई, 1951 को अपने भाषण में डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने कहा था कि सोमनाथ मंदिर दुनिया को यह संदेश देता है कि अद्वितीय श्रद्धा और विश्वास को कभी नष्ट नहीं किया जा सकता। उन्होंने आशा व्यक्त की, कि यह मंदिर सदैव लोगों के हृदय में बसा रहेगा। उन्होंने यह भी कहा कि मंदिर के पुनर्निर्माण से सरदार पटेल का सपना साकार हुआ है। उन्होंने इस बात पर भी बल दिया कि सरदार पटेल की भावनाओं के अनुरूप लोगों के जीवन में समृद्धि भी लानी होगी। इसको लेकर उनके संदेश अत्यंत प्रेरणादायी रहे हैं।

पिछले एक दशक से हम इसी मार्ग पर चल रहे हैं। 'विकास भी, विरासत भी' के मंत्र से प्रेरित होकर सोमनाथ से काशी, कामाख्या से केदारनाथ, अयोध्या से उज्जैन और त्रयंबकेश्वर से श्रीशैलम तक, हमने अपने आध्यात्मिक केंद्रों को आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित किया है। इसके साथ ही उनकी पारंपरिक पहचान को भी बनाए रखा है। आज बेहतर कनेक्टिविटी से ज्यादा से ज्यादा लोग यहां आ पा रहे हैं। इससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को बल मिल रहा है, आजीविका सुरक्षित हो रही है, साथ ही 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की भावना और सशक्त हो रही है। सोमनाथ की रक्षा और इसके पुनर्निर्माण के लिए जिन्होंने अपना सर्वस्व बलिदान किया, उनका संघर्ष हम कभी नहीं भुला सकते। भारत के विभिन्न हिस्सों से आए लोगों ने इसकी भव्यता और दिव्यता को लौटाने में अपना अद्भुत योगदान दिया। उनकी ऐसी ही आस्था पूरे भारतवर्ष को लेकर भी थी। वे एकता की ऐसी अद्भुत डोर से बंधे थे, जिसे जमीनी सीमाओं में नहीं बांटा जा सकता। आज की विभाजित दुनिया में, सोमनाथ से मिलने वाली एकता की यह सीख पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक है। सोमनाथ अपनी गौरवशाली परंपरा के साथ हमेशा खड़ा रहेगा, क्योंकि यह हमारी साझा सभ्यता का प्रतीक है। इसी गौरव को नमन करते हुए बलिदान देने वाले वीरों की स्मृति में और दानवीरों की उदारता को याद करते हुए अगले एक हजार दिनों तक यहां विशेष पूजा आयोजित की जाएगी। यह देखकर बहुत प्रसन्नता हो रही है कि बड़ी संख्या में लोग इस पुनीत कार्य में अपना योगदान दे रहे हैं।

सोमनाथ हमें याद दिलाता है कि जब कोई समाज अपनी आस्था, अपनी संस्कृति और अपनी एकता से जुड़ा रहता है, तब उसे लंबे समय तक दबाया नहीं जा सकता। आज भी हमारी सबसे बड़ी शक्ति यही साझा चेतना है, यही एकात्म भाव है। यही भावना हमें विभाजन से ऊपर उठकर राष्ट्रहित में साथ चलने की प्रेरणा देती है।

प्रेरणा

जब उपहास बना इतिहास रचने की शक्ति

मानव जीवन में कई बार ऐसे क्षण आते हैं जब अपमान, तिरस्कार और उपेक्षा व्यक्ति के मन को भीतर तक घायल कर देते हैं। कुछ लोग इन परिस्थितियों में टूट जाते हैं, जबकि कुछ इन्हीं कठिनाइयों को अपनी सबसे बड़ी ताकत बना लेते हैं। इतिहास गवाह है कि जिन लोगों ने अपने दर्द को संघर्ष में बदला, वही आगे चलकर समाज और राष्ट्र के लिए प्रेरणा बने। ऐसे ही अद्भुत व्यक्तित्व थे विष्णुगुप्त, जिन्हें दुनिया चाणक्य के नाम से जानती है। उनका जीवन इस सत्य का प्रमाण है कि मनुष्य की पहचान उसके रूप या बाहरी आकर्षण से नहीं, बल्कि उसके ज्ञान, विचार और कर्मों से होती है। जिस बालक का कभी उसके साधारण रूप को लेकर मजाक उड़ाया गया था, उसी ने आगे चलकर अपने अद्भुत ज्ञान और नीति से पूरे भारत की दिशा बदल दी। विष्णुगुप्त का जन्म एक सामान्य ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनका बचपन साधारण परिस्थितियों में बीता। वे देखने में आकर्षक नहीं माने जाते थे। उनका रंग सांवला था, शरीर दुबला-पतला और चेहरे पर तीखे नैन-नक्श थे। उस समय भी समाज में बाहरी सुंदरता को महत्व दिया जाता था। लोग अक्सर किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व का मूल्यांकन उसके रूप से करने लगते थे। एक दिन बालक विष्णुगुप्त अपने पिता के साथ एक यज्ञ में पहुंचे। वहां अनेक विद्वान, पुरोहित और प्रतिष्ठित लोग उपस्थित थे। वातावरण धार्मिक और भव्य था, लेकिन उसी स्थान पर कुछ लोगों की दृष्टि उस छोटे बालक के ज्ञान या संस्कारों पर नहीं, बल्कि उसके रूप पर गई। उन्होंने विष्णुगुप्त के स्वरूप का उपहास उड़ाना शुरू कर दिया। कोई उनके रंग पर टिप्पणी कर रहा था तो कोई उनके दुबले शरीर पर हंस रहा था।

एक छोटे बालक के लिए यह अनुभव अत्यंत पीड़ादायक था। विष्णुगुप्त के मन को गहरी चोट पहुंची, लेकिन उन्होंने उस समय कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। वे शांत रहे और सब कुछ सुनते रहे। उनके भीतर एक तूफान उठ रहा था। घर लौटते समय उनके मन में कई प्रश्न घूम रहे थे। उन्होंने अपने पिता से पूछा कि क्या संसार में मनुष्य का मूल्य केवल उसके रूप से तय होता है? उनके पिता एक ज्ञानी और गंभीर स्वभाव के व्यक्ति थे। उन्होंने बड़े धैर्य से अपने पुत्र को समझाया कि मनुष्य की असली पहचान उसका ज्ञान, बुद्धि और कर्म होते हैं। उन्होंने कहा कि बाहरी रूप केवल क्षणिक आकर्षण दे सकता है, लेकिन विचार और चरित्र ही व्यक्ति को महान बनाते हैं। पिता के ये शब्द बालक विष्णुगुप्त के मन में गहराई से उतर गए। उस दिन उन्होंने एक संकल्प लिया। उन्होंने निश्चय किया कि वे अपने ज्ञान और बुद्धि से स्वयं को इतना सक्षम बनाएंगे कि दुनिया उनके चेहरे को नहीं, बल्कि उनके विचारों को याद रखेगी। यह केवल एक बालक का संकल्प नहीं था, बल्कि आत्मसम्मान की रक्षा का व्रत था। उन्होंने अध्ययन को अपना सबसे बड़ा साधन बना लिया। वे घंटों ग्रंथों का अध्ययन करते, विद्वानों से प्रश्न पूछते और जीवन के विभिन्न पक्षों को समझने का प्रयास करते। उनकी रुचि केवल वेदों और शास्त्रों तक सीमित नहीं थी। वे राजनीति, समाज, अर्थशास्त्र और मानव स्वभाव को भी गहराई से समझना चाहते थे। समय के साथ उनका ज्ञान बढ़ता गया। वे तक्षशिला जैसे महान शिक्षा केंद्र पहुंचे, जहां उन्होंने शिक्षा प्राप्त की और बाद में अध्यापन भी किया। उनकी बुद्धिमत्ता और तर्कशक्ति इतनी प्रखर थी कि बड़े-बड़े विद्वान भी उनसे प्रभावित हो जाते थे। वे केवल एक शिक्षक नहीं थे, बल्कि दूरदर्शी चिंतक भी थे। उन्होंने अपने समय की राजनीतिक परिस्थितियों का गहराई से अध्ययन किया। उस दौर में भारत अनेक छोटे-छोटे राज्यों में विभाजित था। विदेशी आक्रमणों का खतरा बढ़ रहा था और कई शासक विलासिता तथा अहंकार में डूबे हुए थे। चाणक्य ने महसूस किया कि यदि देश को एक सशक्त नेतृत्व नहीं मिला, तो उसकी संस्कृति और स्वतंत्रता दोनों संकट में पड़ सकती हैं। इसी सोच ने उन्हें केवल विद्वान नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माता बना दिया। उन्होंने अपने ज्ञान को समाज और राष्ट्र के हित में प्रयोग करने का निर्णय लिया। इसी दौरान उनकी मुलाकात चन्द्रगुप्त नामक एक बालक से हुई। चाणक्य ने उसकी आंखों में वह क्षमता देखी जो एक महान शासक में होनी चाहिए। उन्होंने चन्द्रगुप्त को शिक्षा दी, उसे युद्धनीति सिखाई, राजनीति का ज्ञान दिया और नेतृत्व की वास्तविक भावना समझाई। उन्होंने उसे केवल राजा बनने के लिए नहीं, बल्कि एक आदर्श शासक बनने के लिए तैयार किया।

वर्षों की कठिन तपस्या, रणनीति और संघर्ष के बाद चन्द्रगुप्त मौर्य ने मौर्य साम्राज्य की स्थापना की। यह केवल एक साम्राज्य की स्थापना नहीं थी, बल्कि भारतीय इतिहास में एक नए युग की शुरुआत थी। चाणक्य ने अपनी बुद्धि और नीति से यह सिद्ध कर दिया कि सच्चा नेतृत्व तलवार की शक्ति से नहीं, बल्कि दूरदृष्टि और विचारों की शक्ति से बनता है। उनकी नीतियां आज भी राजनीति, प्रबंधन और जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में अध्ययन का विषय हैं। उन्होंने जीवन के हर पहलू पर गहरे विचार प्रस्तुत किए। उनका मानना था कि व्यक्ति को कठिन परिस्थितियों से घबराना नहीं चाहिए। अपमान और असफलता को यदि सही दिशा दी जाए, तो वही सफलता की सबसे बड़ी प्रेरणा बन सकते हैं।

चाणक्य का जीवन आज भी युवाओं के लिए एक प्रेरणा है। आधुनिक समाज में भी लोग बाहरी सुंदरता, धन और दिखावे को अत्यधिक महत्व देते हैं। कई प्रतिभाशाली लोग केवल इसलिए आत्मविश्वास खो बैठते हैं क्योंकि वे समाज के बनाए सौंदर्य के मानकों पर खरे नहीं उतरते। लेकिन चाणक्य की कहानी बताती है कि वास्तविक शक्ति मनुष्य के भीतर होती है। यदि व्यक्ति अपने ज्ञान, मेहनत और आत्मविश्वास पर विश्वास रखे, तो वह किसी भी उपहास को अपनी सफलता की सीढ़ी बना सकता है।

उनका जीवन यह भी सिखाता है कि आहत मन हमेशा विनाश की ओर नहीं जाता। यदि व्यक्ति अपने दर्द को सही दिशा दे, तो वही दर्द परिवर्तन की सबसे बड़ी शक्ति बन सकता है। चाणक्य ने अपने अपमान को क्रोध में नहीं बदला, बल्कि उसे ज्ञान और राष्ट्र निर्माण की ऊर्जा बना दिया। यही कारण है कि सदियों बाद भी उनका नाम सम्मान और आदर के साथ लिया जाता है। वे केवल एक विद्वान नहीं, बल्कि आत्मसम्मान, संकल्प और राष्ट्रभक्ति के प्रतीक बन गए।

आज जब भी कोई व्यक्ति अपने जीवन में उपेक्षा या अपमान का सामना करता है, चाणक्य का जीवन उसे यह संदेश देता है कि परिस्थितियां चाहे कितनी भी कठिन क्यों न हों, यदि मन में दृढ़ इच्छाशक्ति और ज्ञान की प्यास हो, तो व्यक्ति इतिहास बदल सकता है। बाहरी रूप समय के साथ मिट जाता है, लेकिन महान विचार और कर्म अमर हो जाते हैं। यही कारण है कि दुनिया आज उस बालक को याद करती है जिसे कभी उसके रूप के कारण अपमानित किया गया था, लेकिन जिसने अपनी बुद्धि और नीति से पूरे राष्ट्र का भविष्य बदल दिया।

विधानसभा चुनाव परिणाम स्पष्ट जनादेश नई सरकारों की होगी कड़ी अग्निपरीक्षा

पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव परिणाम आ चुके हैं। नई सरकारों के गठन की प्रक्रिया आरम्भ हो चुकी है। बंगाल, असम, केरल, तमिलनाडु और पुद्दुचेरी के ये विधानसभा चुनाव परिणाम कई स्पष्ट संकेत देने वाले हैं। बंगाल, असम, और पुद्दुचेरी ने जहां प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाले भाजपा व राजग गठबंध को दो तिहाई बहुमत के साथ चुना वहीं तमिलनाडु और केरल में भी सत्ता बदल गई। बंगाल, असम और पुद्दुचेरी में विकास, कल्याणकारी योजनाओं व हिंदुत्व का कमाल रहा। असम में कल्याणकारी योजनाओं के सहारे भाजपा जहां महिलाओं और युवाओं को साधने में सफल रही वहीं मुख्यंत्री हिमंता बिस्वा सरमा ने बांग्लादेशी घुसपैठ के खिलाफ मुहिम छेड़कर नस्ल, क्षेत्र और भाषा में बनते हिंदुओं को एकजुट करने में अहम भूमिका निभाई। असम और बंगाल की जनता को भाजपा यह भरोसा दिलाने में सफल रही कि केवल भाजपा ही बांग्लादेशी घुसपैठ की समस्या से मुक्ति दिला सकती है। बंगाल और असम के बाद सबसे अधिक चर्चा तमिलनाडु को लेकर हो रही है। तमिलनाडु के चुनाव परिणामों ने सभी को हैरान कर दिया है। एक बार द्रमुक और एक बार अन्नाद्रमुक का मिथक टूट गया है। फिल्म स्टार विजय की झोली वोटों से भरी है। केरलम में पराजय के बाद देश भर से वामपंथी सरकारों का अंत हो चुका है तथापि वह अपना राजनैतिक और वैचारिक अस्तित्व बचाए रखने के लिए दो विधायकों के बल पर तमिलनाडु में एक्टर थलपति विजय की नई सरकार मे घुस रही है। सभी राज्य विधानसभाओं में भाजपा का खाता खुल चुका है। पहली बार केरलम में भाजपा के तीन व तमिलनाडु में एक विधायक जीतने में सफल रहे हैं।

तमिलनाडु में थलपति विजय की सरकार- तमिलनाडु की जनता द्रविड़ राजनीति से हताश और निराश हो चुकी थी। कभी द्रमुक और कभी अन्ना द्रमुक राज्य इनके बीच में झूलता रहता था। तमिल राजनीति में फिल्मी कलाकारों की अहम भूमिका रही है एम. जी. रामचंद्रन से लेकर करुणानिधि और जयललिता जैसे सितारों ने वहां की राजनीति में अहम भूमिका निभाई और लंबे समय तक मुख्यमंत्री रहे।

तमिलनाडु में एक्टर थलपति विजय की इतनी प्रचंड लहर चली कि मुख्यमंत्री स्टालिन अपनी सीट तक हार गए। इस लहर का आभास किसी भी राजनैतिक विश्लेषक को नही था। एक्टर थलपति विजय की विजय में मुख्य भूमिका उनके चुनावी वायदों ने की है जो अधिकांशतः मुफ्त की रेवड़ी वाले हैं। विवाह के लिए महिलाओं को 22 कैरेट का आठ ग्राम सोना देने से लेकर 60 सल से कम आयु की महिलाओं को 2500 रुपए मासिक सहायता प्रति परिवार छह फ्री सिलेंडर देने का वादा काम कर गया। गरीब दुल्हनों के लिए रेशमी साड़ी और महिलाओं द्वारा संचालित स्वयं सहायता समूहों के लिए पांच लाख रुपए तक के बयाज मुक्त ऋण का आश्वासन भी विजय ने दिया है। थलपति विजय ने वैसे ही कई लोक लुभावन वायदे किये है जैसे कभी आप नेता अरविंद केजरीवाल किया करते थे। यह थलपति विजय तमिलनाडु के केजरीवाल सिद्ध हो सकते हैं।

ईसाई पिता ओर हिंदू मां की संतान विजय ने अपनी पार्टी की विचारधारा तैयार करने में द्रविड़ विचारधारा और तमिल राष्ट्रवाद के तत्वों को जोड़ा है। इनकी पार्टी तमिलगा वेटी कझागम की स्थापना फरवरी 2024 में हुई, जो तमिलनाडु और पुद्दुचेरी तक फैली हुई है। लोग सोच रहे हैं कि विजय की आखिर इतनी बड़ी विजय कैसे हो गई– विजय लम्बे समय से कई घरों के चूल्हों के ईंधन, बेटियों की पढ़ाई ओर बहनों की शादी का खर्च लगातार उठा रहे थे। उनके वोटबैक में सबसे बड़ी हिस्सेदारी महिलाओं और युवाओं की रही है। वह अपनी फिल्मों में गरीबों के मसीहा के तौर पर पेश किए जाते थे जिसका परिणाम अब सबके सामने है। विजय की चुनावी जनसभाओं में अभूवपूर्व भीड़ उमड़ रही थी किंतु कोई राजनैतिक विश्लेषक यह मानकर नहीं चल रहा था कि वह सरकार बनाने तक पहुंच जाएंगे।

तमिलनाडु में यदि कोई सबसे बड़ा परजीवी दल साबित हुआ है तो वह कांग्रेस है क्य उसने हर बार की तरह अपना अस्तित्व बचाये रखने के लिए एक और क्षेत्रीय दल की सरकार में गठबंधन के बहाने सेंधमारी कर ली है। जो दल कांग्रेस के साथ गए व कांग्रेस जिन दलों के साथ गई उन दलों का क्या हाल हो रहा है सभी को पता है। वैसे अभी थलपति विजय का शपथ ग्रहण समारोह भी ग्रहण ग्रस्त लग रहा है।

अभियान

सतपुड़ा की वादियों में छिपा देवत्व, रहस्य और प्रकृति का अनुपम संगम

भारत की धरती केवल इतिहास और संस्कृति की धरोहरों से ही समृद्ध नहीं है, बल्कि यहां ऐसे अनगिनत स्थान भी हैं जहां आस्था, रहस्य, प्रकृति और लोककथाएं एक साथ जीवंत हो उठती हैं। मध्य प्रदेश के आदिवासी बाहुल्य बैतूल जिले का भैंसदेही क्षेत्र भी ऐसा ही अद्भुत स्थान है, जहां सतपुड़ा पर्वत श्रृंखलाओं की गोद में बसे प्राचीन मंदिर, रहस्यमयी कथाएं, घने जंगल, झरने और आध्यात्मिक वातावरण लोगों को किसी अलौकिक संसार का अनुभव कराते हैं। पूर्णा नदी के उद्गम स्थल के रूप में प्रसिद्ध यह क्षेत्र केवल प्राकृतिक सौंदर्य का केंद्र नहीं, बल्कि सदियों पुरानी लोकआस्थाओं और चमत्कारिक घटनाओं का जीवंत प्रतीक भी माना जाता है। यहां स्थित सिद्धनाथ शिव मंदिर अपनी अद्वितीय स्थापत्य कला, रहस्यमयी निर्माण कथा और आध्यात्मिक ऊर्जा के कारण दूर-दूर तक श्रद्धालुओं और पर्यटकों को आकर्षित करता है।

सतपुड़ा पर्वतमालाओं से घिरे इस क्षेत्र में प्रवेश करते ही ऐसा प्रतीत होता है मानो प्रकृति स्वयं किसी प्राचीन कथा को सजीव कर रही हो। घने जंगलों, ऊंचे पर्वतों और शांत वातावरण के बीच स्थित सिद्धनाथ शिव मंदिर पहली ही दृष्टि में लोगों को आश्चर्यचकित कर देता है। विशाल शिलाखंडों से निर्मित यह मंदिर लगभग 15वीं शताब्दी का माना जाता है। मंदिर की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसके निर्माण में प्रयुक्त पत्थर इतने विशाल और भारी हैं कि आधुनिक तकनीक के बिना उन्हें एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाना भी कठिन प्रतीत होता है। यही कारण है कि इस मंदिर को लेकर अनेक रहस्यमयी कथाएं प्रचलित हैं।

स्थानीय जनश्रुतियों के अनुसार, इस मंदिर का निर्माण केवल एक ही रात में किया गया था। कहा जाता है कि भोजर नाम के दो अद्भुत शिल्पकारों को देवताओं से यह वरदान प्राप्त था कि वे रातों-रात किसी भी निर्माण कार्य को पूरा कर सकते थे। उन्होंने विशाल शिलाखंडों को काटकर इस भव्य मंदिर का निर्माण प्रारंभ किया। पूरी रात वे अलौकिक गति से कार्य करते रहे और मंदिर लगभग पूर्ण होने ही वाला था कि तभी किसी कारणवश उन्हें श्राप मिल गया। श्राप के प्रभाव से दोनों शिल्पकार स्वयं पत्थर के बन गए और मंदिर का शिखर अधूरा रह गया। तभी से यह मंदिर बिना शिखर के आज भी उसी रूप में खड़ा है। स्थानीय लोग इस कथा को गहरी श्रद्धा के साथ सुनाते हैं और मानते हैं कि इस मंदिर में आज भी उन शिल्पकारों की दिव्य ऊर्जा विद्यमान है।

मंदिर की वास्तुकला अपने आप में आश्चर्य का विषय है। इसमें तीन प्रवेश द्वार बनाए गए हैं और इसकी संरचना इतनी वैज्ञानिक एवं सूक्ष्म है कि सूर्य की पहली किरण सीधे गर्भगृह में स्थापित शिवलिंग पर पड़ती है। इतना ही नहीं, पूर्णिमा की रात चंद्रमा की रोशनी भी मंदिर के गर्भगृह तक पहुंचती है और शिवलिंग को आलोकित कर देती है। प्राचीन काल में आधुनिक तकनीक के अभाव के बावजूद इतनी सटीक दिशा और कोणों के आधार पर मंदिर निर्माण वास्तव में भारतीय शिल्पकला और ज्योतिष ज्ञान की महानता को दर्शाता है। मंदिर के गर्भगृह में स्थापित नंदी बाबा की प्रतिमा भी रहस्य का केंद्र मानी जाती है। कहा जाता है कि यदि नंदी प्रतिमा को किसी वस्तु से तेजी से स्पर्श किया जाए तो उसमें से घंटी जैसी ध्वनि सुनाई देती है। इस अद्भुत ध्वनि को लोग चमत्कार मानते हैं, जबकि कुछ विशेषज्ञ इसे पत्थर की विशेष संरचना और ध्वनि प्रतिध्वनि का परिणाम बताते हैं। लेकिन स्थानीय श्रद्धालुओं के लिए यह भगवान शिव की दिव्य उपस्थिति का प्रमाण है।

भैंसदेही क्षेत्र की लोककथाओं में प्रकृति और आस्था का गहरा संबंध दिखाई देता है। जनश्रुति के अनुसार, जब कभी इस क्षेत्र में सूखा पड़ता था और वर्षा नहीं होती थी, तब यहां के आदिवासी समुदाय मंदिर के गर्भगृह को जल से भर देते थे। जैसे ही जल का स्तर शिवलिंग तक पहुंचता, कुछ ही समय में तेज वर्षा शुरू हो जाती थी। यह परंपरा आज भी लोगों की आस्था का हिस्सा बनी हुई है। आदिवासी समुदाय प्रकृति को देवतुल्य मानता है और उनके लिए पर्वत, नदी, जंगल तथा मंदिर केवल भौतिक संरचनाएं नहीं, बल्कि जीवित शक्तियां हैं। यही कारण है कि यहां की संस्कृति में प्रकृति और आध्यात्म का अद्भुत संतुलन दिखाई देता है।

इतिहासकारों के अनुसार, प्राचीन काल में भैंसदेही क्षेत्र को महिष्मती के नाम से जाना जाता था और यह रघुवंशी राजा गय की राजधानी मानी जाती थी। समय के साथ इसका नाम बदलकर महिश्वती, फिर महिषादेही और अंततः भैंसदेही हो गया। यह क्षेत्र केवल धार्मिक दृष्टि से ही महत्वपूर्ण नहीं रहा, बल्कि ऐतिहासिक और सांस्कृतिक रूप से भी अत्यंत समृद्ध माना जाता है। यहां की मिट्टी में प्राचीन सभ्यताओं और राजवंशों की स्मृतियां आज भी जीवित हैं।

भैंसदेही के समीप स्थित कुकरू महादेव पहाड़ियां भी प्रकृति प्रेमियों और पर्यटकों के लिए विशेष आकर्षण का केंद्र हैं। समुद्र तल से लगभग 3676 फीट की ऊंचाई पर स्थित यह क्षेत्र सतपुड़ा पर्वतमालाओं का दूसरा सबसे ऊंचा स्थान माना जाता है। भोंडियाकुंड गांव के समीप स्थित इन पहाड़ियों से सूर्यास्त का दृश्य इतना अद्भुत दिखाई देता है कि लोग मंत्रमुग्ध हो जाते हैं। जब सूर्य धीरे-धीरे पहाड़ों के पीछे डूबता है और उसकी सुनहरी किरणें पर्वतों तथा जंगलों पर फैलती हैं, तब पूरा वातावरण किसी चित्रकार की कल्पना जैसा प्रतीत होता है। यहां स्थित सात पर्वतों में से दो महाराष्ट्र की सीमा में और पांच मध्य प्रदेश की सीमा में आते हैं। सूर्यास्त के समय इन पर्वतों के बीच फैलती लालिमा और बादलों की बदलती आकृतियां लोगों को गहरे आध्यात्मिक अनुभव से भर देती हैं। इस क्षेत्र का संबंध महाभारत कालीन कथाओं से भी जोड़ा जाता है। यहां से निकलने वाली सिपना नदी सतपुड़ा के पांचवें पर्वत क्षेत्र से होकर बहती है। यह नदी मध्य प्रदेश में केवल कुछ किलोमीटर बहने के बाद महाराष्ट्र के मेलघाट टाइगर रिजर्व कॉरिडोर से गुजरते हुए अमरावती की ओर बढ़ जाती है। स्थानीय मान्यताओं के अनुसार, महाभारत काल में महाबली भीम ने यहां शिवलिंग की स्थापना कर कठोर तपस्या की थी। यह भी कहा जाता है कि चिखलदरा क्षेत्र में भीम ने कीचक का वध किया था। इन कथाओं ने इस क्षेत्र की आध्यात्मिक महत्ता को और अधिक बढ़ा दिया है।

भैंसदेही और इसके आसपास का पूरा क्षेत्र आज इको टूरिज्म और आध्यात्मिक पर्यटन की दृष्टि से तेजी से विकसित हो रहा है। यहां स्थित मुक्तागिरी, मेंधागिरि के 52 मंदिर, धूनी वाले दादाजी मंदिर, शारदा मंदिर, साईं मंदिर, शीतला माता मंदिर, रेणुका माता मंदिर और गुप्तवाड़ा शिव मंदिर जैसे अनेक धार्मिक स्थल श्रद्धालुओं को आकर्षित करते हैं। इसके अलावा डेडपानी की पवनचक्कियां, काटोल नर्सरी का शासकीय उद्यान और घने जंगलों से घिरे प्राकृतिक स्थल पर्यटकों को प्रकृति के करीब ले जाते हैं। यहां आने वाला हर व्यक्ति आधुनिक जीवन की भागदौड़ और तनाव से दूर शांति का अनुभव करता है। सतपुड़ा की वादियों में बसे इस क्षेत्र की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यहां प्रकृति, इतिहास और आध्यात्म एक-दूसरे में घुले-मिले दिखाई देते हैं। यहां के आदिवासी समुदाय ने सदियों से अपनी परंपराओं, लोककथाओं और प्रकृति के प्रति सम्मान को जीवित रखा है। यही कारण है कि भैंसदेही केवल एक पर्यटन स्थल नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति और लोकआस्था की जीवंत धरोहर बन चुका है।

आज जब आधुनिकता के दौर में लोग प्राकृतिक और आध्यात्मिक शांति की तलाश में दूर-दूर तक यात्रा करते हैं, तब भैंसदेही जैसा स्थान उन्हें प्रकृति और आस्था के बीच संतुलन का वास्तविक अनुभव कराता है। सिद्धनाथ शिव मंदिर के विशाल शिलाखंड, अधूरा शिखर, सूर्य और चंद्रमा की किरणों का अद्भुत समन्वय, रहस्यमयी ध्वनियां और लोककथाएं इस क्षेत्र को अलौकिक बना देती हैं। यह स्थान केवल आंखों को नहीं, बल्कि मन और आत्मा को भी गहराई से स्पर्श करता है। शायद यही कारण है कि जो भी व्यक्ति एक बार इस भूमि पर आता है, वह यहां की रहस्यमयी सुंदरता और आध्यात्मिक ऊर्जा को जीवनभर भूल नहीं पाता।

RNI No. GJHIN/25/A2786 Printed, Published & Owned by RAGINI JIGNESHKUMAR VAGHELA and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, “Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, “Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424. Editor : JIGNESHKUMAR PATHABHAI VAGHELA
Regd.Office : B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424 Gujarat,India. Phone : (o) 7698333307 (M) 8485951747,7096333307
Email:navsarjansanskruti2016@gmail.com*navsarjansanskruti2016@yahoo.com*Website : www.navsarjansanskruti.com

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने गिफ्ट सिटी-गांधीनगर में 'इंडिया एयरक्राफ्ट लीजिंग एंड फाइनेंसिंग समिट 2.0' का उद्घाटन किया

▸▸ केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री की विशेष उपस्थिति

▸▸ नागरिक उड्डयन मंत्रालय, 'आईएफएससीए' और फिक्की के संयुक्त तत्वावधान में समिट का आयोजन

▸▸ देश में एयरक्राफ्ट लीजिंग इंडस्ट्रीज के लिए गिफ्टी सिटी स्थित अंतरराष्ट्रीय वित्तीय सेवा केंद्र प्राधिकरण मुख्य भूमिका निभा रहा है : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

▸▸ हमारा संकल्प आईएफएससीए के माध्यम से यूनीफाइड रेगुलेटरी व्यवस्था के जरिए एयरक्राफ्ट लीजिंग इंडस्ट्रीज के लिए कारोबारी सुगमता को बढ़ाना है

▸▸ गिफ्ट सिटी आईएफएससीए के साथ एयरक्राफ्ट लीजिंग इंडस्ट्रीज का सहयोग प्रधानमंत्री के 2047 के विकसित भारत के संकल्प को गति देगा

केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री श्री किंजरापु राममोहन नायडू

▸▸ गिफ्ट सिटी का एयरक्राफ्ट लीजिंग एंड फाइनेंसिंग का सक्षम इकोसिस्टम एविएशन सेक्टर में देश की आत्मनिर्भरता के लिए अहम बनेगा

▸▸ भारत 2035 तक दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा एविएशन मार्केट बनने को तैयार

गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा है कि देश में एयरक्राफ्ट लीजिंग इंडस्ट्रीज के लिए गिफ्ट सिटी स्थित अंतरराष्ट्रीय वित्तीय सेवा केंद्र प्राधिकरण (आईएफएससीए) मुख्य भूमिका निभा रहा है।

मुख्यमंत्री ने शुक्रवार को गांधीनगर स्थित गिफ्ट सिटी में भारत सरकार के नागरिक उड्डयन मंत्रालय, आईएफएससीए और भारतीय वाणिज्य एवं उद्योग महासंघ (फिक्की) के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इंडिया एयरक्राफ्ट लीजिंग एंड फाइनेंसिंग समिट 2.0 का उद्घाटन किया।

केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री श्री किंजरापु राममोहन नायडू की विशेष उपस्थिति में आयोजित इस समिट में देश-विदेश के एविएशन इंडस्ट्रीज के लीडर, नीति निर्माता और हितधारक सहभागी हुए।

समिट की शुरुआत में एयर इंडिया, इंडिगो, स्टार एयर, बैंक ऑफ इंडिया, आईएफएससीए तथा अकासा की ओर से नागरिक उड्डयन क्षेत्र में नई साझेदारियों और निवेशों के लिए विभिन्न समझौता ज्ञापनों (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गए। साथ ही, फिक्की की नॉलेज रिपोर्ट का अनावरण भी किया गया।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में बनी गुजरात इंटरनेशनल फाइनेंस टेक-सिटी (गिफ्ट सिटी) ने देश के फिनटेक हब के रूप में अपनी एक विशिष्ट पहचान बनाई है। यह समिट गिफ्ट सिटी के अंतरराष्ट्रीय वित्तीय सेवा केंद्र प्राधिकरण (आईएफएससीए) की एयरक्राफ्ट लीजिंग एंड फाइनेंसिंग सेक्टर की भूमिका को और व्यापक बनाकर श्रेष्ठ वैश्विक प्रथाओं को स्थानीय स्तर पर लागू करके एविएशन फाइनेंसिंग इकोसिस्टम को सुदृढ़ करने का उद्देश्य पूरा करेगी।

श्री भूपेंद्र पटेल ने इस अवसर पर यह भी बताया कि एयरक्राफ्ट लीजिंग इंडस्ट्रीज के लिए ईज ऑफ डूइंग बिजनेस यानी कारोबारी सुगमता को बढ़ावा देने के लिए आईएफएससीए के माध्यम से यूनीफाइड रेगुलेटर की व्यवस्था की गई है।

मुख्यमंत्री ने प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन में पेश किए गए इस वर्ष के आम बजट में गिफ्ट सिटी अंतरराष्ट्रीय वित्तीय सेवा केंद्र (आईएफएससी) में प्रतिस्पर्धा को बढ़ाने के उद्देश्य से दिए गए टैक्स हॉलिडे और अन्य प्रोत्साहनों पर भी रोशनी डाली।

उन्होंने यह संकल्प व्यक्त करते हुए कि गुजरात एविएशन इंडस्ट्रीज और एयरक्राफ्ट लीजिंग एंड फाइनेंसिंग सेक्टर में भी नेतृत्व करेगा, कहा कि गिफ्ट सिटी में संचालित आईएफएससीए ने अब तक 370 से अधिक एसेट्स लीज पर दिए हैं।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने इस समिट में सहभागी हुए इंडस्ट्री लीडर्स से कहा कि गिफ्ट सिटी आईएफएससीए के साथ उनका सहयोग प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के 2047 तक विकसित भारत के निर्माण के संकल्प को तेजी से साकार करने में सहायक होगा।

केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री श्री किंजरापु राममोहन नायडू ने गिफ्ट सिटी को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का 'ब्रेन चाइल्ड' और भारत के लिए वैश्विक वित्तीय बाजारों का प्रवेशद्वार बताते हुए कहा कि गुजरात सरकार के सहयोग से गिफ्ट सिटी आज एशिया का सबसे गतिशील वित्तीय केंद्र और वैश्विक वित्तीय बाजारों के लिए भारत का प्रवेशद्वार बन गया है।

उन्होंने गिफ्ट सिटी की तुलना डबलिन (आयरलैंड), सिंगापुर और दुबई जैसे अंतरराष्ट्रीय केंद्रों के साथ की और कहा कि गिफ्ट सिटी में एयरक्राफ्ट लीजिंग और फाइनेंसिंग के लिए एक मजबूत इकोसिस्टम तैयार हुआ है, जो एविएशन सेक्टर में भारत को आत्मनिर्भर बनाने में अहम भूमिका निभाएगा।

उन्होंने कहा कि आगामी दशक में भारतीय एविएशन सेक्टर में लीजिंग के लिए 50 बिलियन डॉलर के विशाल अवसर तैयार हो रहे हैं और भारत अब ग्लोबल फाइनेंस का केवल 'ग्राहक' न रहते हुए 'आर्किटेक्ट' बनने की दिशा में कदम बढ़ा रहा है। भारत वर्ष 2035 तक लगभग 2250 एयरक्राफ्ट के बेड़े के साथ, दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा सिविल एविएशन मार्केट बनने के लिए तैयार है।

केंद्रीय मंत्री ने केवल बड़े विमान ही नहीं, बल्कि क्षेत्रीय कनेक्टिविटी के लिए 40 से 100 सीटर विमान, हेलीकॉप्टर और सी-प्लेन की लीजिंग पर भी जोर दिया। उन्होंने इस मौके पर लक्षद्वीप में जल्द ही सी-प्लेन का संचालन शुरू करने की घोषणा की।

उन्होंने कहा कि सरकार अब 'फ्रैक्शनल ओनरशिप' और एयरक्राफ्ट को 'इंफ्रास्ट्रक्चर एसेट' के रूप में मानने जैसी नीतियों पर भी गंभीरता से काम कर रही है।

केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्रालय के सचिव श्री समीर कुमार सिन्हा ने कहा कि यह समिट भारत को एविएशन सेक्टर में 'आत्मनिर्भर' बनाने की दिशा में एक निर्णायक कदम साबित होगी। वर्तमान में, भारतीय एयरलाइंस के 80 फीसदी से अधिक एयरक्राफ्ट आयरलैंड, सिंगापुर और दुबई जैसे विदेशी अधिकारक्षेत्रों से लीज (पट्टे) पर लिए जाते हैं। सरकार का उद्देश्य अब भारत को केवल एक मार्केट नहीं, बल्कि 'फाइनेंसिंग ज्यूरिस्डिक्शन' के रूप में स्थापित करना है।

आईएफएससीए के चेयरमैन श्री के. राजारमन ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के विजनरी नेतृत्व में भारत आज दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा डोमेस्टिक एविएशन मार्केट बन गया है। उन्होंने मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के सहयोग से गिफ्ट सिटी में मेट्रो कनेक्टिविटी और अत्याधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर के विकास की प्रशंसा की। श्री राजारमन ने कहा कि वर्ष 2020 में जहां एक भी लीजिंग यूनिट नहीं थी, वहीं आज गिफ्ट सिटी में 40 से अधिक एयरक्राफ्ट लीजर्स कार्यरत हैं और 200 से अधिक विमानों तथा 84 इंजनों के लीजिंग समझौते सफलतापूर्वक हुए हैं।

फिक्की सिविल एविएशन कमेटी के चेयरमैन और एयरबस इंडिया के प्रबंध निदेशक श्री जुर्गन वेस्टरमियर ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

कार्यक्रम की शुरुआत में केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्रालय के वरिष्ठ आर्थिक सलाहकार श्री अमित रे ने स्वागत भाषण दिया। समिट में केंद्रीय उड्डयन मंत्रालय के उच्चाधिकारी, उड्डयन क्षेत्र के विशेषज्ञ, नीति निर्माता, इंडस्ट्री लीडर्स और निवेशक मौजूद रहे।

एफएसएसएआई कृत्रिम पनीर पर प्रतिबंध लगाने की तैयारी कर रहा है, स्वास्थ्य जोखिमों के कारण कड़ा निर्णय संभव है

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। देश की खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण (एफएसएसएआई) ने बाज़ार में बिकने वाले कृत्रिम पनीर पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने की तैयारी कर ली है। कम पोषक तत्वों से भरपूर यह पनीर स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। उपभोक्ता सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए इसे बाज़ार से हटा दिया जाएगा। इस मामले से जुड़े वरिष्ठ अधिकारियों के अनुसार, एक उच्च स्तरीय समिति ने अक्टूबर 2025 में यह प्रस्ताव तैयार किया था और मार्च 2026 में एक बैठक में इसे आधिकारिक तौर पर मंजूरी दी गई। समिति का तर्क है कि भारत विश्व का सबसे बड़ा डेयरी उत्पादक होने के बावजूद, यहाँ बड़ी मात्रा में सस्ता और मिलावटी कृत्रिम पनीर बेचा जा रहा है। यह दिखने और स्वाद में असली पनीर जैसा ही होता है, जिससे उपभोक्ता भ्रमित

हो जाते हैं। स्वास्थ्य विशेषज्ञों ने चेतावनी दी है कि कृत्रिम पनीर में प्रोटीन नगण्य और वसा अत्यधिक होती है। इसके नियमित सेवन से टाइप-2 मधुमेह और अन्य गंभीर बीमारियाँ हो सकती हैं। उम्मीद है कि सरकार द्वारा उठाए गए ये कड़े कदम डेयरी उद्योग में पारदर्शिता लाएंगे और आम आदमी के स्वास्थ्य में सुधार करेंगे। देश में लगभग 1,000 कंपनियों के पास कृत्रिम पनीर बनाने का लाइसेंस है। नई नीति के तहत, कोई नया लाइसेंस जारी नहीं किया जाएगा और मौजूदा कंपनियों को अपना स्टॉक खाली करने और उत्पादन बंद करने के लिए पर्याप्त समय दिया जाएगा।

बाज़ार में सिंथेटिक चीज़ की मांग तेज़ी से बढ़ी है क्योंकि यह एक सस्ता विकल्प है। इसे मुख्य रूप से ताज़े दूध के बजाय ताड़ के तेल, दूध पाउडर, स्टार्च और इमल्शन फाइबर के मिश्रण से बनाया जाता है। जहां असली ब्रांडेड चीज़ 450 रुपये प्रति किलो तक बिकती है, वहीं सिंथेटिक चीज़ 250 से 300 रुपये में उपलब्ध है। इसका व्यापक रूप से रेस्तरां और ढाबों में उपयोग किया जाता है, जो ग्राहकों के साथ धोखा है।

जबलपुर में नाव दुर्घटना ने हरनी की घटना की याद दिला दी है और जल पर्यटन की सुरक्षा पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत मध्य प्रदेश के जबलपुर स्थित बरगी बांध में हुई दुर्घटना ने एक बार फिर जन सुरक्षा पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं, जिससे वडोदरा में हुई हरनी नौका दुर्घटना की याद आ गई है। इस दुर्घटना ने नौका विहार के रोमांच और मौज-मस्ती की चाह रखने वाले कई लोगों के उत्साह को निराशा में बदल दिया। दिलचस्प बात यह थी कि इस दुर्घटना के बाद भी प्रशासन के पास नौका पर सवार लोगों की कुल संख्या के बारे में सटीक जानकारी नहीं थी। अधिकारियों ने केवल बेचे गए टिकटों की संख्या के आधार पर ही आंकड़े जारी किए, जबकि वास्तविकता यह थी कि कई टिकट धारक अपने बच्चों के साथ थे।

यहां सवाल यह उठता है कि क्या नाव संचालकों के लिए टिकट धारकों के साथ बच्चों की संख्या दर्ज करना अनिवार्य नहीं होना चाहिए? यह बताना जरूरी है कि तेज हवाओं और तूफान के कारण बरगी बांध पर एक क्रूज नाव पलट गई थी। दुर्घटनास्थल से नौ लोगों के शव बरामद किए गए, जबकि कई लोग लापता हो गए। इस त्रासदी के बाद यह स्पष्ट है कि यदि नाव संचालकों को प्रशिक्षण के दौरान अनिवार्य रूप से सिखाए जाने वाले सुरक्षा प्रोटोकॉल की अनदेखी की जाती है, तो यह केवल लापरवाही ही होगी। इसके अलावा, जल पर्यटन के इस क्षेत्र में मौसम पूर्वानुमान प्रणाली की कमी भी गंभीर चिंता का विषय है।

यहां यह याद रखना जरूरी है कि ऐसी दुर्घटनाएं हमारे गुजरात, वडोदरा और अन्य जगहों पर भी हो चुकी हैं। मध्य प्रदेश में हुई इस घटना को ध्यान में रखते हुए, यह अत्यंत महत्वपूर्ण है कि सभी राज्य सरकारें इस दुर्घटना से सबक लें और सभी सुरक्षा प्रोटोकॉल और प्रबंधन प्रणालियों में व्यापक सुधार लागू करें।

केरल में अंगदान के नाम पर बड़ा फर्जीवाड़ा: जाली लेटरहेड, फर्जी पुलिस मंजूरी और नकली सिफारिश पत्रों का खुलासा, पांच आरोपी गिरफ्तार

कोच्चि। मानवता और जीवन बचाने की भावना से जुड़ी अंगदान व्यवस्था को झकझोर देने वाले एक बड़े फर्जीवाड़े का खुलासा केरल में हुआ है। राज्य पुलिस ने ऐसे गिरोह का भंडाफोड़ किया है जो अंगदान करने वालों और अंग प्राप्त करने वाले मरीजों के लिए फर्जी दस्तावेज तैयार कर अवैध तरीके से पूरी प्रक्रिया को प्रभावित कर रहा था। इस मामले में शुक्रवार को पुलिस ने पांच लोगों को हिरासत में लिया और कई स्थानों पर एक साथ छापेमारी की। शुरुआती जांच में सामने आया है कि आरोपियों ने अस्पतालों, पुलिस अधिकारियों, जनप्रतिनिधियों और डॉक्टरों के नाम पर जाली दस्तावेजों का पूरा नेटवर्क खड़ा कर रखा था, जिसके जरिए अंगदान प्रक्रिया में जरूरी सत्यापन को प्रभावित किया जा रहा था।

मामले की गंभीरता को देखते हुए केरल पुलिस ने विस्तृत जांच शुरू कर दी है। कुन्नाथुनाडु पुलिस द्वारा दर्ज दो अलग-अलग मामलों में आरोपियों से पूछताछ की जा रही है। हिरासत में लिए गए लोगों की पहचान एर्नाकुलम जिले के पेरिंगाला निवासी नजीब कल्लाथारा और उनकी पत्नी रशीदा, कुन्नाथुनाडु के सनी वर्गीस और उनकी पत्नी सिनी वर्गीस तथा पट्टीमट्टम के सनोज केपी के रूप में हुई है। पुलिस को संदेह है कि यह गिरोह लंबे समय से सक्रिय था और कई लोगों को जाली दस्तावेज उपलब्ध करा चुका है। जांच एजेंसियां अब इस बात का पता लगाने में जुटी हैं कि इस नेटवर्क का दायरा केवल केरल तक सीमित था या इसके तार दूसरे राज्यों तक भी फैले हुए हैं।

पुलिस अधिकारियों के अनुसार, आरोपियों को उनके घरों और पल्लीकारा स्थित एक डिजिटल स्टूडियो पर छापेमारी के बाद हिरासत में लिया गया। जांच के दौरान पुलिस को बड़ी मात्रा में इलेक्ट्रॉनिक उपकरण और दस्तावेज मिले हैं। छापेमारी में कंप्यूटर, मोबाइल फोन, डिजिटल स्टोरेज डिवाइस और डीवीआर जब्त किए गए हैं, जिनकी फॉरेंसिक जांच कराई जा रही है। पुलिस को उम्मीद है कि इन उपकरणों से गिरोह के काम करने के तरीके, संपर्कों और फर्जी दस्तावेज तैयार करने की पूरी प्रक्रिया के बारे में अहम जानकारी मिल सकती है।

इस पूरे मामले में सबसे चौंकाने वाली बात यह सामने आई है कि आरोपियों ने अंगदान प्रक्रिया में इस्तेमाल होने वाले अत्यंत संवेदनशील दस्तावेजों में हेराफेरी की थी। भारत में अंगदान की प्रक्रिया बेहद सख्त नियमों और सत्यापन के बाद पूरी की जाती है। किसी भी व्यक्ति के अंगदान या अंग प्रत्यारोपण के लिए पुलिस सत्यापन, स्थानीय निकायों की पुष्टि, डॉक्टरों की रिपोर्ट और कई बार जनप्रतिनिधियों के प्रमाण पत्र तक की आवश्यकता पड़ती है। इन सभी प्रक्रियाओं का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना होता है कि अंगदान पूरी तरह स्वैच्छिक और कानूनी हो तथा इसमें किसी प्रकार की खरीद-फरोख्त या दबाव शामिल न हो। लेकिन जांच में सामने आया है कि आरोपी इसी व्यवस्था का दुरुपयोग कर रहे थे। पुलिस के मुताबिक गिरोह ने कोच्चि के दो निजी अस्पतालों के जाली लेटरहेड तैयार किए थे।

पश्चिम रेलवे के 71वें रेल सप्ताह पुरस्कार समारोह में भावनगर मंडल को मिली तीन प्रतिष्ठित दक्षता शील्ड

पश्चिम रेलवे के 71वें रेल सप्ताह पुरस्कार समारोह का आयोजन शुक्रवार, 08 मई, 2026 को नरीमन पॉइंट स्थित यशवंतराव चव्हाण ऑडिटोरियम, मुंबई में अत्यंत गरिमामय वातावरण में सम्पन्न हुआ। यह समारोह प्रतिवर्ष पश्चिम रेलवे के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की उत्कृष्ट कार्यशैली, समर्पण, कर्तव्यनिष्ठा तथा चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में उनके उल्लेखनीय योगदान को सम्मानित करने हेतु आयोजित किया जाता है।

रेल सप्ताह समारोह के दौरान पश्चिम रेलवे के विभिन्न मंडलों एवं विभागों को उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन के आधार पर दक्षता शील्ड प्रदान की जाती है। इस वर्ष भावनगर मंडल ने उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल करते हुए वाणिज्य, संरक्षा एवं राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य निष्पादन के लिए तीन प्रतिष्ठित शील्ड प्राप्त कर मंडल का गौरव बढ़ाया है।

भावनगर मंडल के मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी ने जानकारी देते हुए बताया कि रेल मदद शिकायतों के त्वरित एवं प्रभावी निपटारे में नोडल एजेंसी के रूप में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री रामाश्रय पाण्डेय द्वारा मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा की उपस्थिति में "रेल मदद दक्षता शील्ड" वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी को प्रदान की गई।

इसी प्रकार संरक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य एवं बेहतर सुरक्षा मानकों के लिए "संरक्षा शील्ड" वरिष्ठ मंडल संरक्षा अधिकारी श्री सोनु कुमार को तथा राजभाषा कार्यान्वयन एवं हिंदी के प्रभावी उपयोग हेतु "राजभाषा शील्ड" मंडल विद्युत इंजीनियर एवं राजभाषा अधिकारी श्री रामप्रित मौर्या को प्रदान की गई।

भावनगर मंडल को प्राप्त इन उपलब्धियों से अधिकारियों एवं कर्मचारियों में हर्ष एवं उत्साह का वातावरण है। मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा ने इस सफलता का श्रेय मंडल के सभी कर्मचारियों की टीम भावना, कर्तव्यनिष्ठा एवं उत्कृष्ट कार्यसंस्कृति को देते हुए सभी को बधाई दी। उन्होंने भविष्य में भी इसी समर्पण एवं उत्कृष्टता के साथ कार्य करते रहने का आह्वान किया।

भाजपा जनकल्याण मंच की गूगल मीटिंग सम्पन्न - संगठन को मिला सशक्त दिशा-निर्देश

भाजपा जनकल्याण मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री दर्शन आर शाह जी के सानिध्य एवं मयंक जी के नेतृत्व में संगठन के सभी पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं की महत्वपूर्ण गूगल मीटिंग सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई।

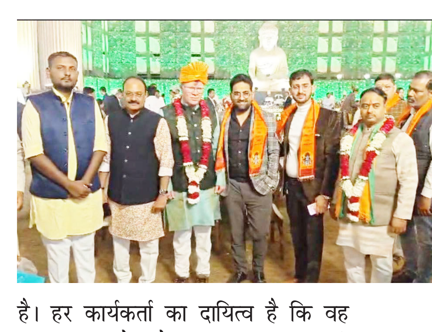

बैठक को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष जी ने तीनों प्रदेशों में भाजपा की ऐतिहासिक विजय पर सभी कार्यकर्ताओं को हार्दिक बधाई दी और इसे देश के लोकप्रिय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के सशक्त नेतृत्व, निर्णायक नीतियों और जनकल्याणकारी सोच पर जनता के अटूट विश्वास का प्रतीक बताया।

उन्होंने स्पष्ट कहा कि भाजपा का मूल मंत्र "सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास" केवल नारा नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण का अटूट संकल्प है।

राष्ट्रीय अध्यक्ष जी ने संगठन के प्रत्येक कार्यकर्ता को चेताते हुए कहा कि अब समय केवल बैठकों का नहीं, बल्कि मैदान में उतरकर जनता के बीच काम करने का है। हर कार्यकर्ता का दायित्व है कि वह अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति तक सरकार की योजनाओं का लाभ पहुंचाए और विपक्ष के झूठ, भ्रम एवं दुष्प्रचार का मुंहतोड़ जवाब सेवा, सत्य और विकास के माध्यम से दे।

उन्होंने भारतीय संस्कृति और सनातन परंपराओं की रक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता बताते हुए साधु-संतों के सम्मान एवं गौमाता की रक्षा को राष्ट्र का गौरव बताया। गौमाता को "राष्ट्रीय माता" घोषित कराने के लिए देशव्यापी जनआंदोलन को तेज करने का आह्वान किया गया। इसके तहत सभी पदाधिकारियों को निर्देशित किया गया कि वे तहसीलदार, डीएम, एसडीएम एवं संबंधित मंत्रियों को ज्ञापन सौंपकर इस मांग को मजबूती से रखें। बैठक में यह महत्वपूर्ण निर्णय भी लिया गया कि जन सुनवाई एवं जनता दरबार के माध्यम से आमजन की समस्याओं का त्वरित समाधान सुनिश्चित किया जाएगा, जिससे संगठन की जमीनी पकड़ और अधिक सुदृढ़ हो सके।

इस अवसर पर दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष पंडित संतोष मिश्रा जी, राष्ट्रीय अध्यक्ष किसान मोर्चा श्री रामलाल वैष्णव जी, राष्ट्रीय महामंत्री श्री रवि शर्मा जी, पंकज जी, मनोज जी, लक्ष्मी जी सहित महिला मोर्चा, किसान मोर्चा एवं युवा मोर्चा के सभी पदाधिकारी उपस्थित रहे।

अनुशासन पर सख्त संदेशः राष्ट्रीय अध्यक्ष जी ने स्पष्ट और कड़े शब्दों में निर्देश दिया कि भविष्य में किसी भी बैठक में सभी पदाधिकारियों—प्रदेश अध्यक्ष, प्रदेश सचिव, उपाध्यक्ष, महामंत्री, संगठन महामंत्री एवं सभी जिला अध्यक्षों की उपस्थिति अनिवार्य होगी। बिना किसी ठोस कारण के अनुपस्थिति को गंभीरता से लिया जाएगा। यदि कोई पदाधिकारी अत्यावश्यक कारणवश उपस्थित नहीं हो सकता, तो उसे पूर्व में लिखित सूचना प्रदेश या राष्ट्रीय अध्यक्ष को देना अनिवार्य होगा।

अंत में संगठन विस्तार पर विशेष बल देते हुए कहा गया कि भाजपा जनकल्याण मंच को देश के हर कोने तक पहुंचाने के लिए सभी कार्यकर्ताओं को तत्काल प्रभाव से सक्रिय होना होगा और अपने आचरण से संगठन की गरिमा को सर्वोपरि रखना होगा। "मजबूत संगठन, सशक्त राष्ट्र — यही हमारा संकल्प है।"

सोना वायदा में 459 रुपये और चांदी वायदा में 3820 रुपये की वृद्धिः क्रूड ऑयल वायदा में 78 रुपये की नरमी

मुंबईः देश के अग्रणी कमोडिटी डेरिवेटिव्स एक्सचेंज एमसीएक्स पर कमोडिटी वायदा, ऑप्शंस और इंडेक्स फ्यूचर्स में 189871.36 करोड़ रुपये का टर्नओवर दर्ज हुआ। कमोडिटी वायदाओं में 28909.25 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ, जबकि कमोडिटी ऑप्शंस में 160962.11 करोड़ रुपये का नॉशनल टर्नओवर हुआ। कमोडिटी ऑप्शंस में कुल प्रीमियम टर्नओवर 3646.87 करोड़ रुपये का हुआ। कीमती धातुओं में सोना-चांदी के वायदाओं में 17673.30 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। एमसीएक्स सोना जून वायदा सत्र के आरंभ में 152672 रुपये के भाव पर खूलकर, 153103 रुपये के दिन के उच्च और 152320 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 152261 रुपये के पिछले बंद के सामने 459 रुपये या 0.3 फीसदी की बढ़त के साथ 152720 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर कारोबार कर रहा था। गोल्ड-गिनी मई वायदा 327 रुपये या 0.27 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 122908 रुपये प्रति 8 ग्राम पर आ गया। गोल्ड-पेटल मई वायदा 38 रुपये या 0.25 फीसदी की तेजी के संग 15401 रुपये प्रति 1 ग्राम हुआ। सोना-मिनी जून वायदा सत्र के आरंभ में 152634 रुपये के भाव पर खूलकर, 153050 रुपये के दिन के उच्च और 152300 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 441 रुपये या 0.29 फीसदी की तेजी के संग 152617 रुपये प्रति 10 ग्राम हुआ। गोल्ड-टेन मई वायदा प्रति 10 ग्राम सत्र के आरंभ में 152839 रुपये के भाव पर खूलकर, 153499 रुपये के दिन के उच्च और 152571 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 152461 रुपये के पिछले बंद के सामने 439 रुपये या 0.29 फीसदी की तेजी के संग 152900 रुपये प्रति 10 ग्राम हुआ।

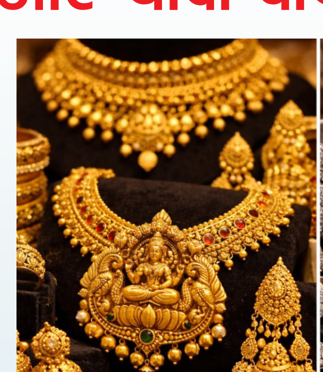

चांदी के वायदाओं में चांदी जुलाई वायदा सत्र के आरंभ में 259999 रुपये के भाव पर खूलकर, 262880 रुपये के दिन के उच्च और 258426 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 258540 रुपये के पिछले बंद के सामने 3820 रुपये या 1.48 फीसदी की तेजी के संग 262360 रुपये प्रति किलो हुआ। इनके अलावा चांदी-मिनी जून वायदा 3377 रुपये या 1.29 फीसदी की मजबूती के साथ 264594 रुपये प्रति किलो बोला गया। जबकि चांदी-माइक्रो जून वायदा 3374 रुपये या 1.29 फीसदी की तेजी के संग 264600 रुपये प्रति किलो हुआ।

मेटल वर्ग में 4707.75 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। तांबा मई वायदा 18.25 रुपये या 1.4 फीसदी बढ़कर 1322.5 रुपये प्रति किलो के भाव पर ट्रेड हो रहा था। जबकि जस्ता मई वायदा 35 पैसे या 0.1 फीसदी चढ़कर 348.05 रुपये प्रति किलो के भाव पर पहुंचा। इसके सामने एल्यूमीनियम मई वायदा 1.75 रुपये या 0.48 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 368.7 रुपये प्रति किलो पर आ गया। जबकि सीसा मई वायदा 20 पैसे या 0.1 फीसदी चढ़कर 200.4 रुपये प्रति किलो हुआ।

▸▸ कमोडिटी वायदाओं में 28909.25 करोड़ रुपये और कमोडिटी ऑप्शंस में 160962.11 करोड़ रुपये का दर्ज हुआ टर्नओवरः सोना-चांदी के वायदाओं में 17673.30 करोड़ रुपये का हुआ कारोबार

इन जिंसों के अलावा कारोबारियों ने एनर्जी सेगमेंट में 6263.89 करोड़ रुपये के सौदे किए। एमसीएक्स क्रूड ऑयल मई वायदा सत्र के आरंभ में 9044 रुपये के भाव पर खूलकर, 9137 रुपये के दिन के उच्च और 8866 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 78 रुपये या 0.86 फीसदी की गिरावट के साथ 8987 रुपये प्रति बैरल के भाव पर कारोबार कर रहा था। जबकि क्रूड ऑयल-मिनी मई वायदा 78 रुपये या 0.86 फीसदी लुढ़ककर 8986 रुपये प्रति बैरल बोला गया। इनके अलावा नैचुरल गैस मई वायदा 262.6 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 267.6 रुपये और नीचे में 261.9 रुपये पर पहुंचकर, 263.9 रुपये के पिछले बंद के सामने 10 पैसे या 0.04 फीसदी बढ़कर 264 रुपये प्रति एमएमबीटीयू के भाव पर ट्रेड हो रहा था। जबकि नैचुरल गैस-मिनी मई वायदा 30 पैसे या 0.11 फीसदी बढ़कर 264.3 रुपये प्रति एमएमबीटीयू के भाव पर ट्रेड हो रहा था। कृषि जिंसों में मेंथा ऑयल मई वायदा सत्र के आरंभ में 988.8 रुपये के भाव पर खूलकर, 2.9 रुपये या 0.29 फीसदी की बढ़त के साथ 989.9 रुपये प्रति किलो के भाव पर कारोबार कर रहा था।

कारोबार की दृष्टि से एमसीएक्स पर सोना के विभिन्न अनुबंधों में 8571.68 करोड़ रुपये और चांदी के विभिन्न अनुबंधों में 9101.62 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। इसके अलावा तांबा के वायदाओं में 4191.35 करोड़ रुपये, एल्यूमीनियम और एल्यूमीनियम-मिनी के वायदाओं में 246.23 करोड़ रुपये, सीसा और सीसा-मिनी के वायदाओं में 16.89 करोड़ रुपये, जस्ता और जस्ता-मिनी के वायदाओं में 240.49 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ। इन जिंसों के अलावा क्रूड ऑयल और क्रूड ऑयल-मिनी के वायदाओं में 4313.55 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। जबकि नैचुरल गैस और नैचुरल गैस-मिनी के वायदाओं में 1924.40 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ। मेंथा ऑयल के वायदा में 0.53 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई।

ओपन इंटरेस्ट सोना के वायदाओं में 11280 लोट, सोना-मिनी के वायदाओं में 65544 लोट, गोल्ड-गिनी के वायदाओं में 26799 लोट, गोल्ड-पेटल के वायदाओं में 369652 लोट और गोल्ड-टेन के वायदाओं में 57813 लोट के स्तर पर था। जबकि चांदी के वायदाओं में 7248 लोट, चांदी-मिनी के वायदाओं में 22087 लोट और चांदी-माइक्रो वायदाओं में 79546 लोट के स्तर पर था। क्रूड ऑयल के वायदाओं में 17110 लोट और नैचुरल गैस के वायदाओं में 34196 लोट के स्तर पर था।

कमोडिटी ऑप्शंस ऑन फ्यूचर्स में क्रूड ऑयल मई 9000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति बैरल 94 रुपये की गिरावट के साथ 382.9 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस मई 265 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति एमएमबीटीयू 5 पैसे के सुधार के साथ 10.95 रुपये हुआ। सोना मई 155000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 71.5 रुपये की बढ़त के साथ 1853 रुपये हुआ। इसके सामने चांदी मई 300000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 407.5 रुपये की बढ़त के साथ 1671 रुपये हुआ। तांबा मई 1400 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 2.31 रुपये की बढ़त के साथ 5.97 रुपये हुआ। जस्ता मई 350 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 20 पैसे के सुधार के साथ 4 रुपये हुआ।

पुट ऑप्शंस में क्रूड ऑयल मई 9000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति बैरल 19.6 रुपये की बढ़त के साथ 424.5 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस मई 260 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति एमएमबीटीयू बिना बदलाव के 9.55 रुपये हुआ।

सोना मई 145000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 47 रुपये की गिरावट के साथ 658.5 रुपये हुआ। इसके सामने चांदी मई 230000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 127 रुपये की गिरावट के साथ 1375.5 रुपये हुआ। तांबा मई 1300 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 5.48 रुपये की गिरावट के साथ 16.18 रुपये हुआ।

गुजरात का 870 मेगावाट का पावर बैकअप तैयार : अतिरिक्त बिजली को संग्रहीत करता है बैटरी सिस्टम

▸▸ राज्य में मोढेरा सहित कुल पांच स्थानों पर बैटरी ऊर्जा भंडारण प्रणालियां कार्यान्वित, अन्य 13 प्रोजेक्ट पाइपलाइन में, अधिकतम मांग अवधि के दौरान करेंगे बिजली की आपूर्ति

▸▸ ग्रिड को स्थिर रखने में सहायक सिद्ध होगा, अतिरिक्त रिन्यूएबल ऊर्जा का संग्रहण कर इमरजेंसी बैकअप के रूप में भी काम करेगा

▸▸ मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में गुजरात अत्याधुनिक ऊर्जा सॉल्यूशंस अपनाने में अग्रणी

गांधीनगर : भारत के प्रथम सोलर विलेज मोढेरा के सफल क्रियान्वयन के माध्यम से गुजरात ने देश में पहली बार सोलर पावर प्लांट के साथ एकीकृत बैटरी ऊर्जा भंडारण प्रणाली (बीईएसएस) यानी बिजली का संग्रह करने वाली बैटरी व्यवस्था शुरू की थी। मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में इस दिशा में आगे बढ़ते हुए आज गुजरात देश भर में बैटरी स्टोरेज प्रणाली को आगे बढ़ाने में अग्रणी राज्यों की सूची में शामिल हो गया है। मोढेरा के बाद फिलहाल गुजरात में कुल 5 स्थानों पर 870 मेगावाट की क्षमता के साथ बैटरी स्टोरेज की व्यवस्थाएं शुरू की गई हैं। बैटरी स्टोरेज प्रणाली स्थापित करने के लिए अहमदाबाद, गांधीनगर, बनासकांठा, पाटण और कच्छ जिले में 13 और परियोजनाओं का रजिस्ट्रेशन किया गया है।

इन भविष्य-उन्मुख परियोजनाओं और मजबूत नीति के कारण आगामी समय में गुजरात ऊर्जा संग्रहण के क्षेत्र में राष्ट्रीय स्तर पर अग्रणी भूमिका निभाएगा और प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के विजन अनुसार वर्ष 2030 तक 500 गीगावाट गैर-जीवाश्म ईंधन क्षमता को प्राप्त करने के भारत के लक्ष्य में उल्लेखनीय योगदान देगा।

हाल ही में अहमदाबाद की साणंद तहसील के चरल गांव में बैटरी ऊर्जा स्टोरेज प्रणाली शुरू की गई है। इसके अलावा, मेहसाणा जिले के मोढेरा और कच्छ के लखपत में कुल 4 बैटरी स्टोरेज प्रणालियां कार्यरत हैं। राज्य सरकार ने गुजरात इंटीग्रेटेड रिन्यूएबल एनर्जी पॉलिसी-2025 में अत्याधुनिक ऊर्जा संग्रह करने वाली प्रणालियों को एक महत्वपूर्ण घटक के रूप में शामिल किया है। इसके आधार पर बैटरी स्टोरेज के लिए स्वतंत्र परियोजनाओं के साथ-साथ नई रिन्यूएबल ऊर्जा परियोजनाओं के साथ बैटरी स्टोरेज परियोजनाएं और मौजूदा रिन्यूएबल ऊर्जा परियोजनाओं के साथ एकीकृत बैटरी स्टोरेज परियोजनाओं को मंजूरी दी जाती है। आगामी समय में मानक संचालन प्रक्रिया (एसओपी) को मंजूरी मिलने के बाद व्यावसायिक और औद्योगिक उपभोक्ताओं के लिए भी बैटरी स्टोरेज के लिए रजिस्ट्रेशन शुरू किया जाएगा। उसके बाद, औद्योगिक और व्यावसायिक उपभोक्ता अपने सोलर या विंड प्रोजेक्ट के साथ बैटरी स्टोरेज की सुविधा शुरू कर सकेंगे।

क्यों जरूरी है बीईएसएस?

बैटरी स्टोरेज सिस्टम बिजली का संग्रह करने के लिए आवश्यक है। राज्य में सोलर सहित अन्य रिन्यूएबल स्रोतों से बिजली उत्पादन दिन के दौरान बदलता रहता है। जैसे कि दिन के समय सोलर ऊर्जा का उत्पादन ज्यादा होता है और शाम के समय उत्पादन नहीं होता। यदि दिन के दौरान पैदा हुई अतिरिक्त बिजली को सही तरीके से संग्रहीत किया जाए, तो शाम के समय जब मांग अधिक होती है (पीक लोड), तब उस बिजली की आपूर्ति की जा सकती है। वर्तमान में, जब शाम के समय अचानक मांग बढ़ जाती है, तो बिजली आपूर्ति करने वाले ग्रिड पर लोड बढ़ जाता है। इस स्थिति में ग्रिड स्टेबल यानी स्थिर रहे, इसके लिए भी बैटरी स्टोरेज प्रणालियां आवश्यक हैं। राज्य सरकार इस दिशा में ही आगे बढ़ रही है।

गुजरात सरकार का स्मार्ट आयोजन

गुजरात में बैटरी स्टोरेज व्यवस्था के निर्माण के लिए राज्य सरकार रणनीतिक रूप से आगे बढ़ रही है। कंपनियों को प्रतिस्पर्धी बीडिंग के जरिए इस क्षेत्र में आमंत्रित किया जा रहा है। बैटरी स्टोरेज सिस्टम को रिन्यूएबल प्रोजेक्ट के समीप लगाने का आयोजन किया गया है, ताकि अतिरिक्त ऊर्जा को तेजी से संग्रहीत किया जा सके तथा ट्रांसमिशन लॉस और बिजली की बर्बादी को रोका जा सके। गुजरात एनर्जी ट्रांसमिशन कॉर्पोरेशन (जीईटीसीओ) और विद्युत वितरण कंपनियां स्मार्ट प्लानिंग के साथ ग्रिड की क्षमता के अनुसार बैटरी स्टोरेज सिस्टम के स्थल का चुनाव करती हैं। इस व्यवस्था के जरिए बैटरी स्टोरेज केवल बिजली का संग्रह ही नहीं करेगा, बल्कि वोल्टेज और फ्रीक्वेंसी को सपोर्ट करके ग्रिड को स्थिर भी रखेगा, साथ ही इमरजेंसी बैकअप के रूप में सहायता करेगा।

JIWO और ज्ञान गंगोत्री काव्य मंच के कार्यक्रमों में सांस्कृतिक गौरव एवं देशभक्ति का सुंदर संगम

मुंबई, 8 मई। संस्कृति, साहित्य, प्रतिभा और राष्ट्र भावना से ओत-प्रोत दो भव्य कार्यक्रमों का सफल आयोजन सुप्रसिद्ध साहित्यकार, वरिष्ठ समाजसेवी एवं लोढ़ा फाउंडेशन की अध्यक्षा श्रीमती मंजू लोढ़ा के प्रेरणादायी मार्गदर्शन में सम्पन्न हुआ।

श्रीमती लोढ़ा जहाँ *जैन इंटरनेशनल वूमेन ऑर्गनाइजेशन (JIWO)* के साउथ मुंबई चैप्टर की अध्यक्षा हैं, वहीं वे *ज्ञान गंगोत्री काव्य मंच* की संस्थापक-अध्यक्षा भी हैं। दोनों आयोजनों में उत्साह, रचनात्मकता, सांस्कृतिक गौरव और देशभक्ति का सुंदर संगम देखने मिला। जैन समाज की परम पूज्य विदुषी *आर्या श्री मयणाश्रीजी महाराज साहेब* की प्रेरणा एवं नेतृत्व में प्रारम्भ हुई संस्था *JIWO साउथ मुंबई चैप्टर* आज महिलाओं को संस्कृति, सेवा और सशक्तिकरण से जोड़ने का महत्वपूर्ण माध्यम बन चुकी है। लोढ़ा पार्क में आयोजित *JIWO साउथ मुंबई चैप्टर टैलेंट कॉम्पिटिशन* में विभिन्न प्रतिभागियों ने जैन समाज एवं भारतीय संस्कृति पर आधारित नृत्य, संगीत, अभिनय और अन्य प्रस्तुतियों से सभी का मन मोह लिया। कार्यक्रम में महिलाओं और समूहों ने पूरे आत्मविश्वास और उत्साह के साथ अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। इस अवसर पर सुश्री शालिनी पीरामल, डॉ. करेन टेरी रज़ा तथा सुप्रसिद्ध अभिनेत्री एवं समाजसेविका सुश्री दिलजोत विशेष अतिथियों के रूप में उपस्थित रहीं और उन्होंने प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन किया। कार्यक्रम के पश्चात सभी JIWO सदस्यों ने गरबा नृत्य का आनंद लिया, जिससे वातावरण उल्लास और उमंग से भर गया। प्रतियोगिता में विजेता बने सभी प्रतिभागियों को हार्दिक बधाई देते हुए उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन की सराहना की गई। इसी क्रम में लोढ़ा कोस्टेरिया में आयोजित *ज्ञान गंगोत्री काव्य मंच* का काव्य मिलन कार्यक्रम भी अत्यंत सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इसका विषय था "आपकी पसंदीदा जगह", जिसमें विभिन्न कवियों और साहित्य प्रेमियों ने अपनी सुंदर रचनाओं के माध्यम से भावपूर्ण अभिव्यक्तियाँ प्रस्तुत कीं। इसी अवसर पर पश्चिम बंगाल में भारतीय जनता पार्टी की ऐतिहासिक विजय का भी उत्सव मनाया गया। इसमें यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ दी गईं। उपस्थित सभी लोगों ने देश की प्रगति, विकास और मजबूत नेतृत्व के प्रति अपना विश्वास व्यक्त किया। दोनों आयोजन श्रीमती मंजू लोढ़ा के सशक्त नेतृत्व, सांस्कृतिक सोच और सामाजिक समर्पण का प्रेरणादायी उदाहरण बने। सुश्री इंदिरा खींवसरा ने कार्यक्रमों का सफल संचालन किया। श्रीमती मंजू लोढ़ा ने सफल आयोजन के लिए दोनों संस्थाओं की सभी सदस्याओं के प्रति आभार प्रकट किया।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने किया श्री श्री रविशंकर विद्यामंदिर के नए परिसर का भूमिपूजन

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

▸▸ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में शिक्षा राष्ट्र निर्माण का एक शक्तिशाली माध्यम बनी

▸▸ राज्य सरकार शिक्षा के सर्वांगीण विकास के जरिए 'ज्ञान शक्ति' से विकसित गुजरात की नींव मजबूत करने को प्रतिबद्ध

▸▸ आर्ट ऑफ लिविंग संस्थान गोधावी में एक नया भव्य शैक्षणिक परिसर बनाएगा

▸▸ संस्थान में शिक्षा के साथ ही ध्यान, प्राणायाम और मंत्रोच्चार जैसी यौगिक पद्धतियों के माध्यम से मानव मूल्यों का संवर्धन किया जाएगा

▸▸ संस्थान का संकल्प परंपरा और आधुनिकता के संगम के साथ भविष्योन्मुखी शैक्षिक पर्यावरण प्रदान करना है

गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने शुक्रवार को अहमदाबाद जिले के गोधावी गांव में आकार लेने वाले नए शैक्षणिक परिसर 'श्री श्री रविशंकर विद्यामंदिर' का शास्त्रोक्त विधि से भूमिपूजन किया।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में शिक्षा राष्ट्र निर्माण का एक शक्तिशाली माध्यम बन गई है। जब शिक्षा में संस्कार, आध्यात्मिकता और आधुनिकता का समन्वय होता है, तभी एक जिम्मेदार नागरिक का निर्माण होता है।

मुख्यमंत्री ने यह विश्वास व्यक्त किया कि आज जब साणंद क्षेत्र दुनिया के मानचित्र पर सेमीकंडक्टर हब के रूप में उभर रहा है, तब श्री श्री रविशंकर विद्यामंदिर जैसे संस्थान नई पीढ़ी को नवोन्मेषी कौशल और मूल्य-आधारित शिक्षा देकर टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में सृजित हो रहे उज्ज्वल अवसरों के लिए तैयार करेंगे।

राज्य में शिक्षा के सर्वांगीण विकास का जिक्र करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकार शिक्षा के लिए 63 हजार करोड़ रुपए का बड़ा बजट आवंटित करके 'ज्ञान शक्ति' से विकसित गुजरात की नींव को मजबूत कर रही है। बेटियों की शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए लागू की गईं 'नमो लक्ष्मी' और 'नमो सरस्वती विज्ञान साधना' जैसी योजनाओं का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि सरकार के ऐसे दूरदर्शी दृष्टिकोण में यह शैक्षणिक परिसर महत्वपूर्ण योगदान देगा।

इस अवसर पर संस्थान के बच्चों द्वारा प्रस्तुत किए गए 'इंट्यूशन प्रोसेस' के निदर्शन की प्रशंसा करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि आज के सोशल मीडिया के युग में योग और ज्ञान के जरिए बच्चों में चेतना जगाने का कार्य बधाई के पात्र है। मुख्यमंत्री इस मौके पर अपनी शुभकामनाएं व्यक्त करते हुए कहा कि यह विद्या परिसर 'विकसित भारत' के निर्माण के संकल्प को साकार करने के लिए श्रेष्ठ भावी पीढ़ी का निर्माण करेगा।

इस अवसर पर साणंद के विधायक श्री कनुभाई पटेल ने संस्थान को बधाई देते हुए कहा कि इस शैक्षणिक परिसर के माध्यम से क्षेत्र के बच्चों के उज्ज्वल भविष्य का संकल्प साकार हो रहा है।

उन्होंने कहा कि शिक्षा के साथ-साथ संस्थान का आध्यात्मिक प्रशिक्षण बच्चों में एकाग्रता बढ़ाने के साथ ही योग्य संस्कारों का सिंचन करके अद्भुत क्षमताएं विकसित करता है, जो उनके लिए सर्वांगीण विकास को साधने और जीवन में आगे बढ़ने के लिए पथप्रदर्शक साबित होता है। उल्लेखनीय है कि पूज्य गुरुदेव श्री श्री रविशंकर जी के आशीर्वाद के साथ अहमदाबाद जिले के गोधावी गांव में अभी संचालित शैक्षणिक परिसर के अलावा यह नया शैक्षणिक परिसर एक सर्वसमावेशी शैक्षणिक परिसर के रूप में विकसित होगा, जिसमें सीबीएसई आधारित पाठ्यक्रम के साथ ही ध्यान, प्राणायाम और मंत्रोच्चार जैसी यौगिक क्रियाओं के द्वारा मानव मूल्यों का संवर्धन किया जाएगा।

इस परिसर में विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए स्पोर्ट्स एकेडमी, संगीत-नृत्य और नाट्य कला के लिए परफॉर्मिंग एंड क्रिएटिव आर्ट्स एकेडमी, वैज्ञानिक दृष्टिकोण के लिए टेक्नोलॉजी और इनोवेशन एकेडमी तथा नेतृत्व के गुण विकसित करने के लिए बिजनेस एकेडमी जैसी विशेष सुविधाएं उपलब्ध होंगी।

इस प्रकल्प के माध्यम से संस्थान का संकल्प परंपरा और आधुनिकता के संगम के साथ एक ऐसा भविष्योन्मुखी शैक्षिक पर्यावरण उपलब्ध कराना है, जहां विद्यार्थी शैक्षणिक प्रगति के साथ-साथ जीवन कौशल और मजबूत मूल्य व्यवस्था में भी पारंगत बन सकें।

71वां रेल सप्ताह: अहमदाबाद मंडल ने जीतीं 7 दक्षता शील्ड,पश्चिम रेलवे की पहली जनसंपर्क शील्ड अहमदाबाद मंडल के नाम

पश्चिम रेलवे के 71वें रेल सप्ताह पुरस्कार समारोह का आयोजन 8 मई, 2026 को मुंबई स्थित यशवंतराव चव्हाण ऑडिटोरियम में किया गया। यह पुरस्कार समारोह प्रतिवर्ष पश्चिम रेलवे के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की कड़ी मेहनत, समर्पण और उत्कृष्ट कार्य निष्पादन को सम्मानित करने के उद्देश्य से आयोजित किया जाता है। महाप्रबंधक पश्चिम रेलवे श्री रामाश्रय पाण्डेय ने अपने संबोधन में कहा कि रेल सप्ताह के दौरान विभिन्न श्रेणियों में मंडलों एवं इकाइयों को दक्षता शील्डें प्रदान की गईं, जिन्हें वर्ष 2025-26 में विभिन्न क्षेत्रों में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाला पाया गया। पश्चिम रेलवे ने भारतीय रेलवे में ट्रेनों की समयपालनता के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल की है।

71वें रेल सप्ताह पुरस्कार समारोह में अहमदाबाद मंडल ने अपनी कार्यकुशलता और प्रतिबद्धता का परिचय देते हुए एक ऐतिहासिक उपलब्धि दर्ज की है। मंडल रेल प्रबंधक श्री वेद प्रकाश ने बताया कि इस गरिमामयी आयोजन में मंडल ने विभिन्न श्रेणियों में कुल 07 दक्षता शील्ड्स अपने नाम कीं, जो न केवल इसके परिचालन कौशल को दर्शाती हैं बल्कि पश्चिम रेलवे के भीतर इसकी श्रेष्ठ कार्य संस्कृति को भी प्रमाणित करती हैं। इस सफलता की सबसे विशिष्ट कड़ी पश्चिम रेलवे की पहली 'जनसंपर्क शील्ड' रही, जिसे जीतकर अहमदाबाद मंडल ने जन-संवाद और सूचना प्रसार के क्षेत्र में एक नया मानक स्थापित किया है। मंडल की इस बहुमुखी सफलता में तकनीकी और परिचालन क्षेत्रों का भी विशेष योगदान रहा। विशेष रूप से कांकरिया डिपो को 'नमो भारत' जैसी आधुनिक ट्रेनों के उत्कृष्ट रखरखाव के लिए 'मेकेनिकल बेस्ट मेंटेंड (मेल/एक्सप्रेस) ट्रॉफी' से सम्मानित किया गया। इसी प्रकार, पालनपुर रनिंग रूम को उसके उच्च स्तरीय स्वच्छता मानकों और रेलकर्मियों के लिए उपलब्ध कराई गई उत्कृष्ट सुविधाओं हेतु 'बेस्ट मेंटेंड रनिंग रूम शील्ड' प्रदान की गई।

मंडल की सामूहिक कार्यक्षमता का प्रदर्शन उन पुरस्कारों में भी दिखा जो अन्य मंडलों के साथ साझा किए गए। सिविल इंजीनियरिंग शील्ड को वडोदरा मंडल के साथ, जबकि रोलिंग स्टॉक शील्ड को मुंबई सेंट्रल मंडल के साथ साझा किया गया। परिचालन और माल ढुलाई के क्षेत्र में अपनी पकड़ मजबूत रखते हुए अहमदाबाद मंडल ने 'ऑपरेटिंग शील्ड' और 'बेस्ट लोडिंग एफर्ट शील्ड' को रतलाम मंडल के साथ संयुक्त रूप से प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त, बुनियादी ढांचे के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए 'सर्वे एवं कंस्ट्रक्शन शील्ड' को उप मुख्य इंजीनियर-I (निर्माण), अहमदाबाद द्वारा रतलाम के साथ साझा रूप से प्राप्त किया गया, जो मंडल के विस्तारवादी दृष्टिकोण और टीम वर्क की भावना को पुख्ता करता है।

इस गौरवशाली अवसर पर अपर मंडल रेल प्रबंधक श्रीमती मंजू मीणा ने इस सफलता का श्रेय पूरी टीम के सामूहिक प्रयासों और समर्पण को दिया। उन्होंने रेखांकित किया कि अहमदाबाद मंडल का प्राथमिक ध्येय सदैव यात्री सुरक्षा को सर्वोपरि रखना और यात्रा के अनुभव को सुखद बनाने के लिए उच्च स्तरीय सुविधाएं सुनिश्चित करना है। उन्होंने सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को इस सफलता के लिए बधाई देते हुए भविष्य में भी कार्य निष्पादन के इन उच्च मानकों को बनाए रखने का आह्वान किया।

रेल सप्ताह पुरस्कार में वडोदरा मंडल को मिली प्रतिष्ठित 10 दक्षता शील्ड

मंडल रेल प्रबंधक श्री राजू भडके ने इसे सामूहिक प्रयासों का प्रतिफल माना और रेलकर्मियों को दी बधाई

पश्चिम रेलवे के 71वें रेल सप्ताह पुरस्कार समारोह का आयोजन, 08 मई, 2026 को मुंबई के नरीमन पॉइंट स्थित यशवंतराव चव्हाण ऑडिटोरियम में किया गया। यह पुरस्कार समारोह हर साल पश्चिम रेलवे के अधिकारियों और कर्मचारियों की टीम की कड़ी मेहनत और समर्पण को सम्मानित करने के लिए आयोजित किया जाता है, जो हमेशा चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार रहते हैं। रेल सप्ताह के दौरान विभिन्न श्रेणियों में मंडलों/इकाइयों को दक्षता शील्डें प्रदान की गईं। इस महत्वपूर्ण अवसर पर महाप्रबंधक श्री रामाश्रय पाण्डेय ने उन मंडलों और इकाइयों को प्रतिष्ठित महाप्रबंधक की समग्र कार्यकुशलता शील्ड सहित 28 कार्यकुशलता शील्डें प्रदान कीं,जिन्हें वर्ष 2025-26 के लिए विभिन्न क्षेत्रों में सबसे कुशल पाया गया।

वडोदरा मंडल के मंडल रेल प्रबंधक श्री राजू भडके ने बताया कि वर्ष 2025-26 में विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्यों के लिए वडोदरा मंडल ने प्रतिष्ठित 10 दक्षता शील्ड प्राप्त की। मंडल को 10 शील्डों के मिलने पर मंडल रेल प्रबंधक श्री राजू भडके ने मंडल के अधिकारियो एवं कर्मचारियों को बधाई देते हुए कहा है कि यह अधिकारियो एवं कर्मचारियों के सामूहिक प्रयासों का ही प्रतिफल है तथा भविष्य में भी हम इसी प्रकार से निरंतर कार्य करते रहेंगे ताकि अधिक से अधिक शील्ड वडोदरा मंडल को प्राप्त हो सके।

वडोदरा मंडल ने प्रतिष्ठित अकाउंट शील्ड , कमर्शियल शील्ड , ट्रैक्शन शील्ड , मेडिकल शील्ड , स्क्रैप मोबिलाइजेशन शील्ड,बेस्ट वर्कशॉप ट्राफी (प्रतापनगर- वर्कशॉप)प्राप्त की है। साथ ही सिविल इंजीनियरिंग शील्ड अहमदाबाद मंडल के साथ संयुक्त रूप से, EnhM ट्राफी रतलाम मंडल के साथ संयुक्त रूप से, सेफ्टी शील्ड भावनगर मंडल के साथ संयुक्त रूप से, और सिक्यूरिटी शील्ड मुंबई सेंट्रल मंडल के साथ संयुक्त रूप से प्राप्त की जो मंडल के लिए उल्लेखनीय उपलब्धि है।

संयुक्त रूप से प्राप्त शील्ड दोनों मंडलों के पास छः-छः महीने रहेगी। इनमें सिविल इंजीनियरिंग प्रथम छः महीने वडोदरा मंडल के पास तथा बाद के छः महीने अहमदाबाद मंडल के पास रहेगी। EnhM ट्राफी प्रथम छः महीने रतलाम मंडल के पास तथा बाद के छः महीने वडोदरा मंडल के पास रहेगी। सेफ्टी शील्ड प्रथम छः महीने भावनगर मंडल के पास तथा बाद के छः महीने वडोदरा मंडल के पास रहेगी। एवं सिक्यूरिटी शील्ड प्रथम छः महीने मुंबई सेंट्रल मंडल के पास तथा बाद के छः महीने वडोदरा मंडल के पास रहेगी।

पश्चिम रेलवे चलायेगी साबरमती और सुल्तानपुर के बीच समर स्पेशल ट्रेन

पश्चिम रेलवे द्वारा यात्रियों की मांग एवं सुविधा को ध्यान में रखते हुए साबरमती और सुल्तानपुर के बीच विशेष किराये पर समर स्पेशल ट्रेन चलाने का निर्णय लिया गया है। जिसका विवरण इस प्रकार है:

ट्रेन संख्या 04215/04216 साबरमती-सुल्तानपुर-साबरमती स्पेशल (कुल 18 फेरे)

ट्रेन संख्या 04215 साबरमती-सुल्तानपुर स्पेशल 18 मई 2026 से 13 जुलाई 2026 तक प्रति सोमवार साबरमती से प्रातः 08:50 बजे प्रस्थान करेगी तथा अगले दिन 17:00 बजे सुल्तानपुर पहुंचेगी।

इसी तरह ट्रेन संख्या 04216 सुल्तानपुर-साबरमती स्पेशल 17 मई 2026 से 12 जुलाई 2026 तक प्रति रविवार सुल्तानपुर से प्रातः 04:00 बजे प्रस्थान करेगी तथा अगले दिन 07:20 बजे साबरमती पहुंचेगी।

मार्ग में दोनों दिशाओं में यह ट्रेन महेसाणा, पालनपुर, आबूरोड, पिंडवाड़ा, सुमेरपुर-जवाई बांध, फालना, रानी, मारवाड़ जं, ब्यावर, अजमेर, किशनगढ़, जयपुर, बांदीकुई, भरतपुर, आगरा केंट, इटावा, कानपुर सेंट्रल एवं लखनऊ स्टेशनों पर रुकेगी।

इस ट्रेन में एसी-3 टियर इकॉनमी एवं सामान्य श्रेणी के कोच रहेंगे।

ट्रेन संख्या 04215 की बुकिंग 09 मई, 2026 से यात्री आरक्षण केन्द्रों और आईआरसीटीसी की वेबसाइट पर शुरू होगी। ट्रेनों के परिचालन समय, ठहराव और संरचना से सम्बंधित विस्तृत जानकारी के लिए यात्री www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

पश्चिम रेलवे के 71वें रेल सप्ताह समारोह में दक्षता एवं उत्कृष्टता का शानदार प्रदर्शन

▸▸ महाप्रबंधक ने विभिन्न श्रेणियों में मंडलों/इकाइयों को 28 दक्षता शील्डें प्रदान कीं

▸▸ मुंबई सेंट्रल एवं रतलाम मंडल ने संयुक्त रूप से जीती

▸▸ महाप्रबंधक की समग्र कार्यकुशलता शील्ड

▸▸ राजकोट मंडल को प्रदान की गई बेस्ट इंप्रूवमेंट शील्ड

▸▸ जनसंपर्क के क्षेत्र में नई शील्ड की शुरुआत, अहमदाबाद मंडल ने किया अपने नाम

पश्चिम रेलवे का 71वाँ रेल सप्ताह पुरस्कार समारोह शुक्रवार, 8 मई, 2026 को नरीमन पॉइंट स्थित यशवंतराव चव्हाण ऑडिटोरियम, मुंबई में आयोजित किया गया, जिसमें विभिन्न मंडलों एवं इकाइयों को उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन और उपलब्धियों के लिए दक्षता शील्डें प्रदान की गईं। इस अवसर पर पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री रामाश्रय पाण्डेय ने वर्ष 2025-26 के दौरान विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाले पश्चिम रेलवे के मंडलों एवं इकाइयों को 28 दक्षता शील्डें प्रदान कीं। महाप्रबंधक की समग्र कार्यकुशलता शील्ड संयुक्त रूप से मुंबई सेंट्रल एवं रतलाम मंडलों को प्रदान की गई। बेस्ट इंप्रूवमेंट शील्ड राजकोट मंडल को प्रदान की गई।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, मुंबई सेंट्रल मंडल ने विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए कई शील्डें हासिल कीं, जिनमें सर्वश्रेष्ठ मंडल के लिए ऊर्जा दक्षता शील्ड तथा कार्मिक शील्ड शामिल हैं। मुंबई सेंट्रल मंडल ने लेवल क्रॉसिंग समाप्त करने की दिशा में सर्वश्रेष्ठ सड़क सुरक्षा कार्य प्रदर्शन हेतु इंटर-डिविजनल शील्ड भी प्राप्त की।

इसके अतिरिक्त, रोलिंग स्टॉक शील्ड मुंबई सेंट्रल मंडल एवं अहमदाबाद मंडल ने संयुक्त रूप से प्राप्त की, जबकि सुरक्षा शील्ड मुंबई सेंट्रल एवं वडोदरा मंडल को संयुक्त रूप से प्रदान की गई।

श्री विनीत ने आगे बताया कि इस वर्ष पश्चिम रेलवे द्वारा जनसंपर्क के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन हेतु एक नई शील्ड की शुरुआत की गई, जिसे अहमदाबाद मंडल ने प्राप्त किया। अहमदाबाद मंडल ने सर्वश्रेष्ठ लोडिंग एफर्ट शील्ड तथा ऑपरेटिंग शील्ड भी रतलाम मंडल के साथ संयुक्त रूप से हासिल की। इसके अलावा, अहमदाबाद मंडल के पालनपुर स्थित रनिंग रूम को सर्वश्रेष्ठ अनुरक्षित रनिंग रूम घोषित किया गया।

वडोदरा मंडल ने अकाउंट्स, कमर्शियल, ट्रैक्शन, मेडिकल एवं स्क्रैप मोबिलाइजेशन शील्डें प्राप्त कीं। सिविल इंजीनियरिंग शील्ड वडोदरा एवं अहमदाबाद मंडलों ने संयुक्त रूप से जीती।

रतलाम मंडल ने सर्वे एवं कंस्ट्रक्शन तथा सिग्नल एवं टेलीकॉम शील्ड प्राप्त की। साथ ही, स्टोर्स शील्ड रतलाम मंडल (दाहोद जिला) को प्रदान की गई। कमर्शियल स्वच्छता शील्ड राजकोट एवं रतलाम मंडलों ने संयुक्त रूप से प्राप्त की, जबकि रेल मदद शील्ड भावनगर एवं राजकोट मंडलों को संयुक्त रूप से प्रदान की गई। ट्रैक मशीन (सिविल इंजीनियरिंग) हेतु इंटर-डिविजनल शील्ड रतलाम एवं राजकोट मंडलों ने संयुक्त रूप से प्राप्त की। पर्यावरण एवं हाउसकीपिंग प्रबंधन (EnHM) ट्रॉफी रतलाम एवं वडोदरा मंडलों को संयुक्त रूप से प्रदान की गई।

राजभाषा शील्ड भावनगर मंडल को प्रदान की गई, जबकि सुरक्षा शील्ड भावनगर एवं वडोदरा मंडलों ने संयुक्त रूप से प्राप्त की। वडोदरा मंडल की प्रतापनगर वर्कशॉप को सर्वश्रेष्ठ वर्कशॉप ट्रॉफी प्रदान की गई, जबकि अहमदाबाद मंडल के कांकरिया डिपो को सर्वश्रेष्ठ अनुरक्षित मेल/एक्सप्रेस ट्रेन ट्रॉफी प्रदान की गई। ये शील्डें श्री रामाश्रय पाण्डेय द्वारा संबंधित मंडल रेल प्रबंधकों, मुख्य कार्य प्रबंधकों एवं डिपो प्रभारियों को प्रदान की गईं। इस अवसर पर पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन (WRWWO) की अध्यक्षा श्रीमती सुजाता पाण्डेय, पश्चिम रेलवे के अपर महाप्रबंधक, प्रमुख विभागाध्यक्ष तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे। अपने संबोधन में श्री पाण्डेय ने रेल सप्ताह के अवसर पर शुभकामनाएँ दीं तथा महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हासिल करने में कर्मचारियों के सामूहिक प्रयासों की सराहना की। उन्होंने कर्मचारियों को उत्कृष्टता एवं उच्च कार्य मानकों की दिशा में निरंतर प्रयासरत रहने के लिए भी प्रेरित किया।

इसके अतिरिक्त, इस अवसर पर रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन भी किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत में पश्चिम रेलवे के प्रमुख मुख्य कार्मिक अधिकारी ने अतिथियों का स्वागत किया तथा उप महाप्रबंधक द्वारा धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया गया।